वर्ष 50 अंक 05 मई 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 50 ● अंक 05 ● मई 2023 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. बाबा हरदेव सिंह जी के पावन वचन
6. सम्पूर्ण अवतार बाणी
12. चित्रकथा
30. क्या आप जानते हैं?
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
48. आपके पत्र मिले
50. रंग भरो

विशेष/लेख

16. फ्लोरेंस नाइटिंगेल
– पृथ्वीराज
21. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
– घमंडीलाल अग्रवाल
25. सांभर
– डॉ. परशुराम शुक्ल
32. बुलबुल का रंगीन संसार
– दीपांशु जैन
42. स्टेथोस्कोप का जन्म
– राधेलाल 'नवचक्र'

कविताएं

7. बच्चे! मेरी ध्यान से सुन...
– मदन शेखपुरी
20. स्वच्छ जल, स्वच्छ मन
– अमृत हरमन
31. आगे बढ़ना सीखो
– डॉ. रामदुलार सिंह
31. अच्छे बच्चे
– महेन्द्र सिंह शेखावत
39. प्यार के दो बोल
– रंजना चौधरी
39. माता-पिता
– अंशु अडवानी
47. प्यारे बच्चे
– हरजीत निषाद
47. चिड़िया
– मीनू सिंह

कहानियां

8. एक बूंद की कीमत
– राजकुमार जैन 'राजन'
18. प्रायश्चित
– नित्या त्रिपाठी
22. महाराणा की प्रतिज्ञा
– कमल जैन
23. सीख स्वप्न की
– रामअवध राम
24. माँ की आज्ञा सर्वोपरि
– श्यामसुन्दर 'सुमन'
28. जिम्मेदारी किसकी?
– दर्शन सिंह 'आशट'
40. तीन बातें
– राजेन्द्र परदेसी

सकारात्मक सोचें

हम सभी को जीवन मिला है और हम कैसे उसे जीते हैं, यह हमारी बुद्धि एवं विवेक पर निर्भर करता है। जो जहाँ रहता है वह वहाँ की भाषा को धीरे-धीरे सीख जाता है। जब हम छोटे बच्चे होते हैं उस समय जो कुछ भी सीखते हैं वह हमारे बालमन में समाहित हो जाता है। उसका असर जाने-अन्जाने हमारे व्यवहार पर भी पड़ता है। भारत में पैदा हुए हैं या अन्य किसी देश में, हम वहाँ की भाषा बहुत जल्दी सीख जाते हैं। भारत में कितनी भाषाएं हैं, हम हर भाषा में प्रवीण नहीं हो सकते परन्तु फिर भी जो सीखना चाहते हैं वह सीख ही जाते हैं। कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनके अनेक अर्थ होते हैं, कुछ कहने के पहले विराम देने से शब्दों के अर्थ ही बदल जाते हैं। जैसे उसे रोको, मत जाने दो। यहाँ पर एक छोटे से वाक्य में दो अर्थ निकल रहे हैं। रोको, मत जाने दो और उसे रोको मत, जाने दो। इसी तरह वह भूखा है। भूखा शब्द खाने के लिए भी प्रयोग हो रहा है और लालच के लिए भी। इसी तरह शब्दों का प्रयोग हमेशा ही अभिव्यक्ति पर निर्भर करता है। किसी की सोच कैसी है शब्दों का चयन उसका भी प्रतीक होता है।

हमेशा अच्छा एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण लेकर सोचना एक कला है, गुण है। कुछ शब्दों के अर्थों से हम एक नई सोच एवं सकारात्मक जीवन जीने का ढंग भी बना सकते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज हमारे घर आए। उस दिन मेरी छोटी बेटी सुकृति का जन्मदिन था। हमने केक मंगवा रखा था। समयानुसार केक को मेज़ पर सजाया गया और बाबा जी ने स्वयं आगे बढ़कर सुकृति का हाथ पकड़ा और केक कटवाया। बाबा जी ने पहल करते हुए स्वयं सुकृति को केक खिलाया और स्वयं भी खाया। जब मैं बाबा जी को केक खिलाने लगा तो उन्होंने कहा– 'I have eaten the i/eye' केक पर इंग्लिश में लिखा था 'Happy Birthday Sukriti' तो उस समय यही समझा कि आपने केक में लिखा हुआ (i) का हिस्सा खा लिया है। यहाँ पर cake पर सुकृति के नाम में दो बार (i) अक्षर आता है। 'आई' अक्षर के ऊपर की बिन्दी को आँख का निशान बनाकर केक बनाया गया था।

बाबा जी ने देखा कि हम नहीं समझ पाए कि वे क्या सन्देश दे रहे हैं इस पर उन्होंने फिर दोहराया I have eaten the I यहाँ पर पहला (i) (मैंने) का अर्थ ले रहा है और दूसरा (i) का अर्थ अहंकार का। इस तरह उन्होंने तो कह दिया मैंने अहंकार को समाप्त कर दिया है। यह तो केवल ब्रह्मज्ञानी-सद्पुरुष ही समझा सकते हैं। इसी तरह आपने सारा समय सभी को सकारात्मक और रचनात्मक तरीके से जीवन जीने का तरीका स्वयं जीकर भी दिखाया और जीवनपर्यन्त एक शिक्षक, गुरु, मित्र, सखा के भाव के साथ मानव को मानवता का सन्देश पूरे विश्व में प्रसारित भी किया।

साथियों! शब्दों के अर्थ तो हम सभी निकालते हैं। हमें पहल करके दूसरों के भाव को भी ग्रहण करना है और उनकी स्थिति में, स्वयं को रखकर देखें तो उनकी बात हमें समझ आ जाएगी और हमारे मन में पल रहे स्वनिर्मित अहंकार भी स्वत: ही समाप्त हो जाएंगे।

सम्पूर्ण 'हँसती दुनिया' परिवार बाबा हरदेव सिंह जी के द्वारा दिए गए बहुमूल्य सन्देशों को जीवन में जागरूकता के साथ जीकर दिखा पाए। इसी कामना के साथ हम बाबा जी को प्रेम सहित शत्-शत् नमन करते हैं।

–विमलेश आहूजा

बाबा हरदेव सिंह जी के पावन वचन

- सन्तों की ऊँची मत ले लो जीवन की चाल सुन्दर हो जायेगी।
- ठीक सुनकर मानना और उसके अनुसार चलना आ जाये तो वाकई हम लाभान्वित होते हैं।
- अंधेरा रोशनी से ही मिटता है किसी और प्रयत्न से नहीं। इसी तरह बंधनों से निजात परमात्मा को जानकर ही मिलती है।
- निरंकार-प्रभु से नाता जोड़ो, इसी से सुख प्राप्त होते हैं।
- सेवा में जज़्बा देखा जाता है। सामर्थ्य नहीं।
- भक्ति का अर्थ है– सम्पूर्ण समर्पण।
- अहिंसा के भाव से ही मानवता का बचाव होगा।
- सहनशीलता-भक्तिमय आचरण का प्रतीक है।
- मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।
- ज्ञान उजाला है और अज्ञान अंधकार।
- मानव प्रभु की उत्तम रचना है। इसका रूतबा बनाये रखना है।
- मानवता की पहचान परस्पर मिलवर्तन और भाईचारा है।
- यदि आप किसी सन्त-महात्मा को सत्गुरु स्वरूप समझकर सेवा सम्मान करते हैं तो उसकी रसना से जो आशीर्वाद निकलता है उसमें गुरु शामिल होता है।
- संसार में घृणा से अधिक शक्तिशाली प्रेम और क्षमा ही हैं।
- ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।
- कुछ भी बनो मुबारक है पर पहले सब इन्सान बनो।
- हमें उत्तम जीवन मिला है तो हमारा कर्म भी ऊँचा हो, हमारी चाल और हमारी अवस्था भी उत्तम हो। अहंकार त्याग कर विनम्र भाव से जीवन में आगे बढ़ते जाएं।
- दिलों को विशाल करने की आवश्यकता है। यदि दिलों में खुलापन हो, सहनशीलता हो, सबसे मैत्री भाव के साथ प्रेम कायम रखा जाए तो सारी दुनिया में सद्भावना और रूहानियत फैल सकती है।
- प्रदूषण अन्दर हो या बाहर दोनों हानिकारक हैं।
- यदि ज्ञान वाली दृष्टि हमारे पास रहे तो हम सकारात्मक रहेंगे।
- समस्या का कारण नहीं, समाधान बनें।
- हमें अतीत के अनुभवों से लाभ उठाना है। वर्तमान का निर्माण इस तरह करना है जिससे हम अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकें।

हमारे पवित्र ग्रंथ

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 277

मन्निये जेकर बचन गुरु दा उस्तत गुर दी होवेगी।
आपे सिमरन होवेगा ते दुर्मत दूर खलोवेगी।
गुरु बचन है ज्ञान गुरु दा निरंकार है इसदा नाम।
आप तरे मन्न के कुल तारे जम राजा वी करे सलाम।
भाणा मन्ने निरंकार दा सत्गुरु ते विश्वास करे।
कहे अवतार सदा होए सुखिया देवलोक विच वास करे।

भावार्थ: उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सत्गुरु की स्तुति सत्गुरु के वचन मानने से होती है। गुरु के वचनों पर जिसको विश्वास नहीं है, उसको स्वप्न में भी कोई सुख प्राप्त नहीं होता। गुरु के वचनों को केवल सुनना ही काफी नहीं है, उन्हें जीवन में अपनाना भी जरूरी है। यदि गुरु के वचन मन से मान लें तो गुरु की यश, प्रशंसा, स्तुति स्वत: होती जाती है इसलिए वचनों को ध्यान से सुनना और उन्हें अपने व्यवहार में लाना जरूरी है।

गुरु का वचन गुरु का ज्ञान है और निरंकार इसका नाम है। ज्ञान होना अर्थात् परमात्मा की जानकारी, ईश्वर का साक्षात्कार, परमशक्ति का बोध होना। गुरु से ब्रह्मज्ञान पाकर इन्सान निरंकार का असली स्वरूप पहचान लेता है। परमात्मा का असली स्वरूप सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और घट-घट की जानने वाला है। गुरु का शिष्य हर पल इस निराकार-प्रभु का अंग-संग अहसास करता है। गुरु की मत अपनाने से मन की मत अर्थात् विपरीत बुद्धि समाप्त हो जाती है, दुर्मत पास नहीं आती है, दूर भाग जाती है। गुरु की मत पर चलने वाला गुरु के आशीर्वादों का पात्र बनता है। जो अपने मन के अनुसार चलता है वह मनमत वाला होता है और जो गुरु की मत पर चलता है वह गुरमत वाला होता है। गुरमत पार उतारती है और मनमत मझधार में डुबोती है।

बाबा अवतार सिंह जी गुरु के वचन मानने की महत्ता बताते हुए कह रहे हैं कि गुरु के वचनों पर अपना जीवन चलाने वालों का स्वयं पार उतारा स्वयं ही हो जाता है। उसके पूरे कुल का उद्धार हो जाता है। गुरु के वचन मानने से परमात्मा के दर्शन, परमात्मा की भक्ति तो होती ही है, इन्सान के मन से मृत्यु का भय भी समाप्त हो जाता है।

जो गुरमत पर चलते हैं उनका सब जगह सम्मान होता है। ऐसे भक्तों को यमराज भी प्रणाम करते हैं। भक्त निरंकार का भाणा मानता है, ईश्वर की रज़ा में रहता है और सत्गुरु पर पूर्ण विश्वास करता है। ऐसा भक्त देवलोक में वास करता है। मुक्ति पद पाकर परमानंद की अवस्था में रहता है।

भावार्थ : हरजीत निषाद

बच्चे! मेरी ध्यान से सुन ले...

कविता : मदन शेखपुरी

प्रेम-प्यार की जगी है जिसमें,
जितनी-जितनी प्यास।
उसमें उतनी जगी है हिम्मत,
उतना ही विश्वास।।

एक बूँद हिम्मत ही काफी,
तन-मन स्वस्थ बनाने को।
इन दोनों का खास महत्त्व है,
जीवन सही चलाने को।।

बच्चे मेरी ध्यान से सुन ले,
यह छोटी-सी बात।
हिम्मत वाले को किसी ने जग में,
देखा नहीं उदास।।

जीत हमेशा उसकी उतनी-उतनी,
बनी है दास।
प्रेम-प्यार की जगी है जिसमें,
जितनी-जितनी प्यास।।

एक बूंद की कीमत

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

"मगलू! आज तुमने फिर नल खुला छोड़ दिया।" मगलू हिरण की माँ रोमी हिरणी कह रही थी– तुम नहा चुके तो तुरन्त नल बन्द कर देना चाहिए था। कितना पानी बहकर नाली में चला गया।

मगलू रोज कितना ही पानी बरबाद कर देता। सुबह ब्रुश करता तो पूरी रफ्तार से लगातार नल खुला छोड़ देता। खाना खाकर हाथ धोता तो नल बन्द नहीं करता। पानी बेकार बहता रहता।

माँ डांटती रहती, "मगलू तुमसे कितनी बार कहा है कि पानी को बरबाद मत करो, पर तुम हो कि..."

–आपको माँ, क्या फर्क पड़ता है पानी ही तो बहा है, दूध तो नहीं बह गया।– मगलू हिरण बोला।

"तुम्हें खूब पानी मिलता है न, तभी तुम इसकी कीमत नहीं समझते हो। उन लोगों की सोचो जो एक-एक बूंद पानी के लिए तरसते हैं।" माँ बड़बड़ाती हुई खाना बनाने में लग गई।

दोपहर का समय था। मगलू ने स्नानघर में एक बड़ा-सा टब पानी से भर लिया और ऊपर नल चालू कर दिया। उसमें उछल-कूद करते हुए वह नहाने लगा।

जब काफी देर तक मगलू स्नानघर से बाहर नहीं आया तो उसकी माँ रोमी हिरणी वहाँ पहुँची, "अरे ये क्या? तुमने फिर कितना पानी बरबाद कर दिया। देखो, कितना पानी बेकार में बहकर जा रहा है।" कहते हुए रोमी ने नल बंद कर दिया।

–माँ गर्मी लगती है। पानी में खेलने में मजा आता है।– मगलू ने कहा।

–देखो बेटा, तुम्हें उतना पानी खर्च करना चाहिए जितना जरूरी हो। जितना पानी बचाओगे उतना खेतों में दिया जा सकेगा व फसल भी अच्छी होगी। कारखानों में भी पानी जरूरी होता है। पूरा पानी नहीं मिलने

पर हमारे कई कारखाने बंद पड़े हैं।

–पर माँ, नलों में पानी हमारे लिए ही तो आता है। – मगलू ने कहा।

–तुम्हें यहाँ खूब पानी मिल रहा है न इसीलिए तुम्हें उन इलाकों की खबर नहीं जहाँ हमारे जैसे कई प्राणियों को पीने के पानी के लिए दूर-दूर जाना पड़ता है।

– रोमी हिरणी ने समझाने का प्रयास किया।

–लेकिन माँ, पिताजी पानी का बिल तो भरते हैं। फिर जब हम पैसे देकर पानी खरीदते हैं तो क्यों न उससे खेलें?–

माँ समझ गई कि जब तक यह खुद पानी के लिए तरसेगा नहीं इसकी समझ में पानी की कीमत नहीं आएगी। वह चुप हो गई और कुछ सोचने लगी। उनके दिमाग में एक 'आइडिया' आ गया।

रविवार को छुट्टी का दिन था। रोमी हिरणी ने कहा– मगलू तुम्हारे चंचल चाचा ने पड़ोस के जंगल में कॉलेज बनाने के लिए जो जमीन खरीदी है न, उसे देखने चलना है। मैं खाना बनाकर पैक कर लेती हूँ। पापा भी हमारे साथ चलेंगे। चंचल हिरण के दोनों बच्चे भी हमारे साथ चल रहे हैं। कॉलेज की जमीन भी देख आएंगे और पिकनिक भी हो जाएगी। वहाँ से शाम तक लौट आएंगे।

–वाह मम्मी, तब तो बड़ा मजा आएगा– मगलू खुश होते हुए बोला।

ठीक समय पर चंचल चाचा अपनी जीप लेकर आ गये। सब तैयार थे ही, जीप में सवार हो गये। आठ-दस किलोमीटर चलने के बाद एक सुनसान जगह पर पहुँच गये। सब बहुत खुश थे।

–क्यों भाई साहब, कॉलेज बनाने के लिए यह जगह ठीक रहेगी न?

– चंचल चाचा ने पूछा तो मगलू के पिताजी बोले– हाँ, बहुत बढ़िया है आबादी से दूर भी है। जंगल के जानवरों को ऊँची पढ़ाई के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

–अच्छा, तो भाई साहब, आप लोग पिकनिक मनाइए। मुझे जरा शहर में काम है। बच्चे आपके साथ ही हैं। कितने बजे तक लेने आ जाऊँ, आप लोगों को?

–हम तो खेलने का सामान लाए हैं। आप तो देर से आना। शाम के पांच बजे तक।– बच्चों ने कहा।

वहाँ दूर-दूर तक केवल एक ही छायादार बरगद का पेड़ था। उसी के नीचे रोमी हिरणी ने दरी बिछा दी। सब वहाँ बैठ गये।

कुछ देर में बच्चे बेडमिंटन खेलने चले गये। थोड़ी देर बाद मगलू हिरण माँ के पास आया और बोला– माँ, पानी दो, प्यास लगी है।

रोमी हिरणी ने साथ लाई पानी की बोतल मगलू को पकड़ा दी। कुछ ही देर में मगलू व

चाचाजी के बच्चों ने मिलकर साथ में लाई पानी की बोतल खाली कर दी।

दोपहर होते-होते बच्चों को भूख लग गई। रोमी हिरणी ने सबके लिए खाना लगा दिया। खाने में सबको बहुत आनन्द आया। खाने के बाद बच्चों ने पानी मांगा तो, माँ ने बताया– पानी तो बस उसी बोतल में था। वह तो तुमने खत्म कर दिया।

मगलू ने चारों तरफ देखा। दूर एक हैण्डपम्प दिखाई दिया। तीनों बच्चे खाली बोतल लेकर उसकी ओर दौड़ पड़े। धूप में दौड़कर हैण्डपम्प पर पहुँचते-पहुँचते तीनों पसीने से तर हो गये। अब उन्हें और भी जोर से प्यास लगने लग गई। पर जब उन्होंने हत्था पकड़कर हैण्डपम्प चलाना चाहा तो वह एकदम से नीचे गिर गया। पानी निकला ही नहीं।

–यह हैण्डपम्प तो खराब है।– मगलू बोला। दूर-दूर तक दूसरा हैण्डपम्प भी दिखाई नहीं दे रहा था। वहाँ से वापस बरगद के पेड़ तक आते-आते तो तीनों का बुरा हाल हो गया। सबसे छोटा हिरण रोने भी लगा।

–कोई बात नहीं प्यास लगी है तो संतरे की फांके चूस लो।- रोमी हिरणी ने टोकरी से संतरा निकालकर देते हुए कहा।

संतरा खाकर मगलू बोला– इससे कुछ नहीं हुआ माँ, मुझे तो पानी ही चाहिए। प्यास के मारे जान निकली जा रही है।– वह रुआंसा हो उठा।

–बेटे, अब मैं यहाँ पानी कहाँ से लाऊँ? भयंकर गर्मी पड़ रही है और अंकल भी तो शाम तक लेने आएंगे। कुछ देर की ही तो बात है शाम को घर जाकर खूब पानी पी लेना।– रोमी हिरणी ने कहा।

तीन बजते-बजते बच्चों का बुरा हाल हो गया।

–बहुत गर्मी है, माँ! चाचा कब आएंगे? प्यास के मारे गला सूख रहा है।

–तुम्हीं ने पांच बजे तक आने को कहा था।– पिताजी बोले।

–ओह माँ, अब तो रहा नहीं जाता। कहीं से एक घूंट पानी भी नहीं मिल सकता क्या?– मगलू खाली बोतल को टटोलते हुए बोला।

–लगता है अब तुम्हें पानी की एक बूंद की कीमत का अंदाजा लग चुका है। एक-एक घूंट पानी के लिए जानवर कैसे तरसते हैं, तड़फते हैं। इसका अनुभव तुम्हें हो चुका है। चिन्ता न करो तुम्हारे चाचा आते ही होंगे। मैंने उन्हें तीन-सवा तीन बजे तक आने को कह दिया था क्योंकि मैं जानती थी कि इतने समय में ही तुम्हें पानी की कीमत अच्छी तरह पता चल जायेगी।– माँ ने कहा।

तभी उन्हें दूर एक जीप आती दिखाई दी। बच्चे खुशी से उछल पड़े। चंचल भाई, हम जिस काम के लिए आये थे, वह हो चुका है। अब बच्चों को पानी पिला दो।– मगलू के पिताजी ने कहा।

चंचल हिरण ने मुस्कुराते हुए जीप में रखी पानी की बोतलें बच्चों को पकड़ा दीं। बच्चों ने ठंडे पानी की बोतलें लीं और गटागट ढेर सारा पानी पी गये।

''अब पता चला माँ, जिस पानी को हम बुरी तरह बर्बाद करते हैं उसकी एक-एक बूंद कितनी कीमती होती है। अब हम बिल्कुल भी पानी बरबाद नहीं करेंगे।

सब बच्चों ने वादा किया सब अपने घर की ओर वापस लौट पड़े। ❖

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

आयुष अपनी कॉपी लेकर आओ।
आयुष तुम्हारा होमवर्क कम्पलीट क्यों नहीं है?
मैम, वो वो .....
आयुष बेटा, तुम्हारी परीक्षा को सिर्फ एक सप्ताह ही बचा है, अब तुम पढ़ाई में लापरवाही मत करो।
हाँ, आयुष! तुम्हारे पिता जी बिल्कुल सही कह रहे हैं।

अगले दिन
आयुष वीडियो गेम छोड़ो और पढ़ाई करो। कल तुम्हें पापा ने समझाया था ना।
बस मम्मी, पाँच मिनट और खेल लूँ।
ऐसे ही कई दिन बीतते गए। आयुष पढ़ाई को बस टालता रहा। वह दिनभर खेलता और रात को थककर सो जाता।
आयुष, चलो पढ़ाई कर लो। कल तुम्हारी परीक्षा है।
पापा, मैं रात को पढ़ लूँगा।

अरे नहीं, बिजली तो चली गई। अब मैं कैसे पढ़ूँगा। कल मेरी परीक्षा है और मैंने कुछ भी नहीं पढ़ा।

हम कहते थे ना, पढ़ लो, पढ़ लो। लेकिन तुम मानते ही नहीं थे।

मुझे माफ़ कर दो पापा। मैं अब से लापरवाही नहीं करूँगा।

तुम्हें अपनी गलती का एहसास हुआ, ये अच्छी बात है।

शिक्षा: जो समय का सदुपयोग करते हैं केवल वे ही सफल होते हैं।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल

लेख : पृथ्वीराज

एक दिन एक छोटी-सी लड़की स्कूल से अपने घर जा रही थी तो रास्ते में उसे एक कुत्ता मिला। कुत्ते की एक टांग घायल थी। घाव पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। लड़की को कुत्ते पर दया आ गई। वह उसे अपने घर ले आई। उसने कुत्ते के घाव को गर्म पानी से धोया और उस पर पट्टी बांध दी। करीब एक सप्ताह तक रोज पट्टी करने के बाद कुत्ता बिल्कुल ठीक हो गया।

बच्चों क्या आप जानते हो वह दयालु लड़की कौन थी? वह थी– 'फ्लोरेंस नाइटिंगेल।'

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म इटली के फ्लोरेंस नगर में 12 मई 1820 को हुआ था। उसके माता-पिता ने उसका नाम उसी नगर के नाम पर रख दिया, जहाँ वह पैदा हुई थी। उसके पिता का नाम विलियम एडवर्ड नाइटिंगेल और माता का नाम फैनी नाइटिंगेल था।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल बड़ी कोमल हृदय थी। किसी के दु:ख को देखकर वह दु:खी हो जाती थी। उसके मन में इच्छा उठती थी कि दूसरे के दु:ख को दूर करने के लिए कुछ करें। जब वह थोड़ी बड़ी हुई तो उसे नर्स का काम अच्छा लगने लगा। सारा दिन रोगियों और घायलों की सेवा करना ही उसे जीवन का उद्देश्य लगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह नर्स बनेगी। जब उसके माता-पिता को उसकी इस इच्छा का पता चला तो उन्होंने नर्स बनने की अनुमति नहीं दी। वे इस काम को पसंद नहीं करते थे।

जब फ्लोरेंस को माता-पिता की अनुमति नहीं मिली तो उसे बड़ा दु:ख हुआ वह उदास रहने लगी। उसके दृढ़-निश्चय को देखकर माता-पिता को भी झुकना पड़ा। उन्होंने उसे नर्स बनने की अनुमति दे दी।

फ्लोरेंस ने अस्पताल में जाकर नर्स का कार्य सीखा। कुछ दिनों बाद उसे लंदन में नर्स संस्थान का अध्यक्ष बना दिया गया। उसने बड़ी निष्ठा और तल्लीनता से अपने काम को किया। इस समय उसकी लगन को देखकर उसके माता-पिता को मानना पड़ा कि उसे उसके मार्ग से हटाना अन्याय होता।

उन दिनों इंग्लैंड एक युद्ध में उलझा हुआ था। युद्ध में घायल होकर अनेक सैनिक अस्पतालों में आने लगे। अधिक गंभीर घायलों को 'स्कुटारी' नामक अस्पताल में लाया गया। सरकार ने इस अस्पताल में रोगियों की देखभाल

की जिम्मेदारी फ्लोरेंस नाइटिंगेल को सौंप दी। इससे पहले अस्पताल में घायल सिपाहियों की देखभाल का उचित प्रबंध नहीं था। पर फ्लोरेंस ने अस्पताल की काया पलट दी। वह रात-दिन रोगियों की सेवा में जुट गई। वह स्वयं प्रत्येक रोगी से मिलती थी। वह प्रयत्न करती थी कि किसी रोगी को कोई परेशानी न हो। रात को वह हाथ में लैंप लेकर रोगियों के पास जाती थी। उसे देखते ही रोगियों के चेहरों पर मुस्कान खिल जाती थी। बीमार सैनिक उसे 'लैंपवाली देवी' कहकर पुकारते थे।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने न केवल अस्पताल में ही घायलों की चिकित्सा का प्रबन्ध किया अपितु वह लड़ाई के मैदान में भी गई। वहाँ उसने शिविरों में सैनिकों की चिकित्सा का प्रबंध किया। दिन-रात काम करने से उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। मजबूर होकर उसे इंग्लैंड लौटना पड़ा।

इंग्लैंड में उनका जोरदार स्वागत हुआ। किंग एडवर्ड सप्तम् ने उसे सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया। उसका नाम सारे विश्व में प्रसिद्ध हो गया।

90 वर्ष की आयु में 13 अगस्त 1910 को फ्लोरेंस नाइटिंगेल का निधन हो गया। इंग्लैंड की जनता ने उनकी याद में एक शानदार स्मारक बनवाया।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का विश्वास था कि मानवता की सेवा ही भगवान की सच्ची सेवा है। उन्होंने जीवन भर मानवता की सेवा की, इसीलिए आज भी सारा संसार उनका नाम बड़े आदर से लेता है। ❖

विज्ञान-वार्ता

डेसीमीटर

एक कमरे में विज्ञान से सम्बन्धित कुछ उपकरण रखे हुए थे। वे एक-दूसरे के बहुत करीब थे। अतएव उनमें परस्पर विज्ञान-वार्ता शुरू हो गयी।

पहले थर्मामीटर बोला, "मैं किसी मनुष्य के शरीर का तापक्रम आसानी से बता सकता हूँ।"

"दूध का घनत्व बताने की क्षमता मुझमें है," यह लैक्टोमीटर की आवाज थी। वह आगे बोला, "यही नहीं, उसकी शुद्धता-अशुद्धता की परख भी मुझे है।"

अब बैरोमीटर की बारी आयी। उसने भी झट कहा, "किसी भी स्थान पर हवा का क्या दबाव है, मुझसे पूछो। तुरंत बता दूंगा।"

तभी तीनों की बातें सुनकर कमरे के एक कोने में पड़ा लकड़ी का बना एक नन्हा-सा पैमाना अपने को रोक नहीं सका। वह भी टपक पड़ा, "अरे, आप तीनों एक-दूसरे से कितनी दूरी पर हो, यह बताना मेरा काम है।"

"तुम हो कौन?" तीनों की निगाहें एकाएक उस पैमाने की ओर दौड़ गयी।

अपनी नन्हीं आवाज में वह झट से बोला, "मैं हूँ- डेसीमीटर।"

प्रस्तुति : राधेलाल 'नवचक्र'

प्रायश्चित

पौराणिक कथा : नित्या त्रिपाठी

बहुत समय पहले की बात है। भारतवर्ष में उस समय महाराजा शर्याति शासन किया करते थे। वे न्यायप्रियता, प्रजासेवा तथा प्रशासनिक सेवा के लिए अति प्रसिद्ध थे। महाराजा शर्याति के सद्गुणों का व्यापक प्रभाव उनके पुत्रों एवं पुत्रियों पर भी पड़ा। वे अपने लोकप्रिय पिता के पदचिन्हों पर चलकर यश अर्जित कर रहे थे। महाराजा शर्याति अपने पुत्र-पुत्रियों के प्रति अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करते थे।

एक दिन प्रात:काल का समय था। महाराजा शर्याति अपने पुत्र-पुत्रियों के साथ वन-भ्रमण के लिए निकले। महाराजा थके हुए थे, अत: अपनी पत्नी के साथ एक सरोवर के तट पर बैठ गए थे। उनके पुत्र व पुत्रियां घूमते हुए बहुत दूर निकल गए।

अचानक राजकुमारी सुकन्या को मिट्टी के एक छोटे से टीले में दो चमकदार मणि दिखाई दीं। कुतूहलवश सुकन्या उस मणि को देखने निकट आई। इसके बाद भी वह चमकती हुई उस वस्तु को समझ न सकीं। तब उसने एक सूखी लकड़ी की सहायता से दोनों चमकदार मणियों को निकालने का प्रयत्न किया। मणि तो वहाँ से न निकली परन्तु वहाँ से रक्त प्रवाहित होने लगा। सुकन्या व उसके भाई-बहन यह देखकर बहुत ही घबरा गए। वे दौड़ते हुए अपने माता-पिता के पास आए और सारी बात उन्हें बताई।

महाराजा शर्याति अपनी पत्नी तथा बच्चों समेत उस स्थान पर पहुँचे और रक्त देखते ही दु:खी मन से बोले, "बेटी! यह तो बड़ा अनर्थ हो गया। यह च्यवन ऋषि हैं जिनकी तुमने आँखें फोड़ दीं।"

पिता की बात सुनते ही सुकन्या रो पड़ी। उसका शरीर कांपने लगा। टूटते हुए स्वर में उसने कहा, "पिताजी! मेरी जानकारी में नहीं था कि यह महर्षि च्यवन हैं। मुझसे बहुत बड़ा अपराध हुआ।" इतना कहकर वह और भी तेजी से रो पड़ी।

"हाँ बेटी! अन्जाने में ही सही परन्तु तुमसे अपराध तो हो गया। च्यवन ऋषि यहाँ पर तपस्या कर रहे थे। आँधी-तूफान और वर्षा के कारण इनके चारों तरफ मिट्टी का टीला बन गया है। इसी कारण तुम्हें दृष्टिदोष हो गया। तुम्हें केवल दो चमकती आँखें ही दिखीं। अब पता नहीं क्या होगा?" महाराजा शर्याति दु:खी हो गए।

इतने में च्यवन ऋषि के कराहने का स्वर सुनाई दिया। कातर स्वर सुनकर सुकन्या ने तुरन्त निर्णय लिया, "मैं इस पाप का प्रायश्चित करके कठिन हानि की क्षतिपूर्ति बनूँगी।"

"तुम्हारे प्रायश्चित करने से महर्षि की आँखें वापस तो नहीं आएंगी।" पिता शर्याति ने कहा।

सुकन्या बोली, "मैं इनकी आँखें बनूँगी।"

"अरे! क्या कह रही हो बेटी।" शर्याति बोले।

"मैं पूर्ण उचित कह रही हूँ पिताजी। इनके कष्ट में मेरा कष्ट व इनके सुख में ही मेरा सुख होगा। मैं भूल व क्षमा का बहाना बनाकर अपराध मुक्त नहीं होना चाहती। न्याय-नीति के समान अधिकार को स्वीकार कर चलने

में मेरा व विश्व का कल्याण है। यह सब तो मैंने आपसे ही प्राप्त किया है। मैं च्यवन ऋषि से विवाह कर, उनकी आँखें बनकर सेवा-धर्म निभाऊँगी।'' सुकन्या ने कहा।

शर्याति ने कहा, ''च्यवन ऋषि जर्जर व कृशकाय शरीर के हैं और तू युवा है, यह तो बेमेल विवाह होगा।''

सुकन्या बोली, ''पिताजी! यहाँ पर योग्यता और पात्रता का प्रश्न ही नहीं उठता। मुझे तो सहर्ष प्रायश्चित करना है। मैं इस कार्य को अपना धर्म समझकर तपस्या के माध्यम से आनन्दपूर्वक पूर्ण करके रहूँगी। मुझे अपना आशीर्वाद दें।''

सुकन्या के आगे पिता की न चली और वह विवाह की तैयारी में जुट गए। महर्षि च्यवन और सुकन्या का विवाह सम्पन्न हुआ। सुकन्या की त्याग भावना देखकर देवगण भी अत्यन्त प्रसन्न हुए। सुकन्या की अल्पायु देखकर देवताओं ने च्यवन ऋषि को एक औषधि की जानकारी दी जिसे उपभोग में लाते ही ऋषि युवा हो गए। बाद में उस औषधि का नाम 'च्यवनप्राश' हुआ जिसे लोग आज भी ग्रहण करते हैं। ❖

स्वच्छ जल स्वच्छ मन

गीत : अमृत हरमन

जल होगा तो जीवन होगा बात ये सबने जानी।
अन्य ग्रहों पर भी अब जल को ढूंढ रहा है प्राणी।
बेशक दाम न लिया प्रभु ने पर न करें मनमानी।
पानी की कीमत को समझें अब न करें नादानी।

ईश्वर की अनमोल देन है इसका रखना है अहसास।
गर जल है तो ही कल है इसे स्वच्छ रखने का हो प्रयास।
सब मिलकर जब ठान लेंगे तो प्रदूषण का होगा नाश।
स्वच्छता का जहाँ वास है ईश्वर का है वहीं निवास।

आओ मिलकर जल संचय में सारे हाथ बढ़ाएं।
जल के स्रोतों और नदियों को गंदगी से बचाएं।
इस धरती का कर्ज चुकाएं फर्जों को भी निभाएं।
भीतर का हो या बाहर का प्रदूषण को सभी मिटाएं।

दो नन्हीं कविताए

हरिकृष्ण 'हरि'

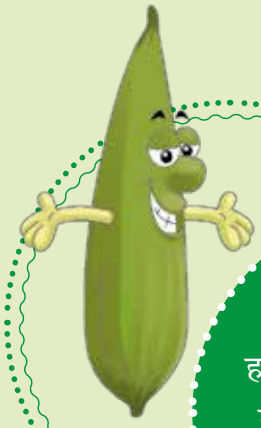

तुरई

हरी तुरई लम्बी धारी सी,
बड़ी विटामिन होती है।
खाती गुड़िया इसकी सब्जी,
गीत उसी के गाती है।।

लहसुन

लहसुन गुणकारी होता है,
खाओ खून साफ होता है।
सर्दी का तो दुश्मन है,
इसलिए प्रिय जन-जन है।।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : रेल की पटरियों में जोड़ों के बीच खाली स्थान क्यों छोड़ा जाता है?

उत्तर : रेलगाड़ी जब पटरी पर चलती है तो पहियों तथा पटरी के बीच में एक प्रकार का घर्षण होता है। इस घर्षण से बहुत अधिक मात्रा में ऊष्मा निकलती है जिसके कारण रेल की पटरी फैलती है। पटरी के इस फैलाव के लिए स्थान देने के उद्देश्य से कहीं-कहीं खाली स्थान छोड़ा जाता है। यदि स्थान नहीं छोड़ा जाएगा तो पटरी के फैलाव से वह टेढ़ी-मेढ़ी हो जाएगी एवं रेलगाड़ी पटरी से उतर जाएगी।

प्रश्न : थर्मस बोतल में गर्म वस्तु गर्म और ठंडी वस्तु ठंडी क्यों रहती है?

उत्तर : थर्मस बोतल कांच की बनी होती है और कांच ऊष्मा का कुचालक होता है। कांच की बोतल की दोनों दीवारों के बीच निर्वात (बिना वायु का स्थान) होने से ऊष्मा बोतल की अन्दर की दीवार से बाहर नहीं आ पाती। इसके अतिरिक्त बोतल की चमकदार बाहरी दीवारें ऊष्मा की विकिरण किरणों को परावर्तित करके बाहरी सतह पर रोक लेती हैं। अतः थर्मस बोतल में गर्म वस्तु गर्म तथा ठंडी वस्तु ठंडी बनी रहती है।

प्रश्न : जल-प्रपात की चोटी की तुलना में उसके तल के पास का पानी हल्का-सा गर्म क्यों होता है?

उत्तर : अधिक ऊँचाई के कारण जल-प्रपात की चोटी पर पानी में स्थितिज ऊर्जा होती है। जब यह पानी नीचे गिरता है तो इसकी स्थितिज ऊर्जा गतिज ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। फलस्वरूप, जब यह पानी जमीन से टकराता है तो इसकी गतिज ऊर्जा का एक भाग ऊष्मीय ऊर्जा में बदल जाता है। इस प्रकार उत्पन्न ऊष्मीय ऊर्जा जल-प्रपात के तल के पास पानी को थोड़ा-सा गर्म कर देती है।

प्रश्न : कुछ पदार्थ बिना ज्वाला के क्यों जलते हैं?

उत्तर : जो पदार्थ गर्म करने पर पहले वाष्पित होते हैं, जलने पर ज्वाला उत्पन्न करते हैं। जैसे- पेट्रोल, मिट्टी का तेल, मोम, गंधक आदि। दूसरे वे ठोस पदार्थ हैं जो गर्म करने पर वाष्पित नहीं होते हैं, बिना ज्वाला के ही जलते हैं। इनके उदाहरणों में प्रमुख है– कोयला।

प्रस्तुति : घमंडीलाल अग्रवाल

महाराणा की प्रतिज्ञा

प्रेरक-प्रसंग : कमल जैन

राजस्थान के राणाओं में महाराणा प्रताप का नाम इतिहास में अमर है। महाराणा प्रताप ने अपने जीवन में अपनी जिन्दगी के कई बदलते रंग देखे। लेकिन उन्होंने कभी दुख महसूस नहीं किया। उनकी वीरता के ऐसे किस्से हैं जिनसे मानव को नसीहतें ग्रहण होती हैं।

उन दिनों की बात है, जब जरा-सी बात को लेकर बादशाह अकबर ने महाराणा प्रताप की राजधानी पर हमला बोल दिया था। अकबर ने यह हमला चालाकी से किया था, इस कारण वे अपने सैनिकों को जुटा न सके। सैनिकों के अभाव के कारण ही महारणा को अकबर के हाथों मात खानी पड़ी।

अकबर की सेना ने पूरी राजधानी पर कब्जा कर लिया। महाराणा प्रताप घने जंगलों में अपनी पत्नी व बेटे के साथ घास-फूस की कुटिया बनाकर उसमें गुजर-बसर कर रहे थे। एक दिन एक हृष्ट-पुष्ट युवक घोड़े पर सवार होकर आया और बुलन्द आवाज़ में बोला– महाराणा प्रताप की जय हो।

बीहड़ जंगल में अपने नाम की जय सुनकर महाराणा असमझ में पड़ गये। भला यहाँ मुझे इस तरह पुकारने वाला कौन आया है। जब उन्होंने नज़रें उठाकर देखा तो सामने भामाशाह खड़ा था।

भामाशाह को देखते ही महाराणा की आँखों में आंसू छलक आये और उसे गले लगाकर बोले– भामा! यह सब किस्मत का खेल है, हम सोने के सिंहासन पर बैठा करते। शाही जिन्दगी व्यतीत किया करते। लेकिन अब ये सारी बातें एक स्वप्न बनकर रह गई हैं।

इस पर भामाशाह ने कहा– महाराज! हम फिर से अपनी राजधानी में अपनी शान का झंडा फहराएंगे। खोया राज्य फिर से प्राप्त करेंगे।

–लेकिन यह कैसे सम्भव है?– महाराणा प्रताप बोला।

भामाशाह ने कहा– महाराज, मेरे पास जो कुछ भी है। वह आपका ही है क्योंकि वह आपके पुरखों का ही दिया हुआ है। वह मैं आपको समर्पित करता हूँ। आप फिर से सेना तैयार करें। हम अपने बुलन्द हौंसले के साथ अकबर से युद्ध करेंगे। जब तक अपना राज्य प्राप्त नहीं कर लेते। चैन से नहीं बैठेंगे।

यह सुनकर महाराणा ने प्रतिज्ञा की कि **जब तक मैं अपना राज्य न जीत लूंगा, तब तक मैं रूखी-सूखी रोटी ही खाऊँगा और जमीन पर ही सोऊँगा।**

महाराणा प्रताप ने अपने सरदारों को फिर से इकट्ठा किया और आदिवासियों तथा भील

नवयुवकों की सेना तैयार की तथा उन्हें सैनिकों का प्रशिक्षण देकर बहादुर बनाया। फिर अकबर के साथ भयंकर युद्ध हुआ और अकबर की सेना भाग खड़ी हुई। अकबर की हार हुई।

अपनी राजधानी को पुनः पाकर महाराणा बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने गरीबों के हित के लिए कई ऐसे कार्य किये जिनसे वे जन-जन में प्रिय हुए।

महाराणा प्रताप जब अपने जंगल के दिनों को याद करते तो उनकी आँखों में आंसू भर आते। जब लोग उनके आंसुओं का कारण जानना चाहते तो वे मुस्कुराकर कहते– इस धरती माँ की गोद में आज भी हजारों राणा मौजूद हैं जो रूखा-सूखा खाते हैं और अपने को प्रकृति का महाराणा कहते हैं। ऐसे महाराणा ही मातृभूमि के प्रहरी हैं क्योंकि वे बंजर भूमि में भी खेती करते हैं, वृक्ष लगाते हैं। धरती के घावों को पेड़ो से भरते हैं।

महाराणा प्रताप को पशु-पक्षियों से भी अथाह प्रेम था। उनका चेतक घोड़ा इतिहास में आज भी अमर है।

महाराणा प्रताप ने एक बार कहा था– **हर इन्सान को अपने हौंसले बुलन्द रखने चाहिएं। अपने को कभी कायर नहीं समझना चाहिए।** राणा को इतिहास में 'घास की रोटी खाने वाला शासक' नाम से भी जाना जाता है। ❖

सीख स्वप्न की

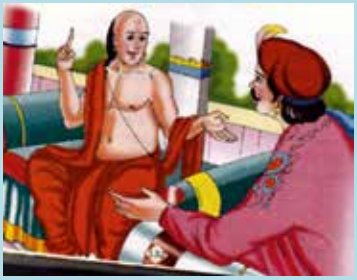

एक दिन किसी राजा के यहाँ एक साधु का आगमन हुआ। राजा बोले, ''मैं आपकी क्या सेवा करूं?''

साधु ने कहा, ''महाराज! मेरे पास एक छोटा-सा पात्र है कृपा करके इसे भरवा दीजिए।''

राजा ने कहा, ''महात्मा जी, इस छोटे पात्र को अमूल्य हीरे-जवाहरात व सोने-चाँदी से अभी भरवा देता हूँ ताकि आगे के जीवन में आपको धन की आवश्यकता न पड़े।''

राजा के आदेशानुसार कोषाध्यक्ष ने उस पात्र को भ. रवाना शुरू किया लेकिन वह भरा ही नहीं भरने के प्रयास में सारा राजकोष खाली हो गया। तब राजा ने महात्मा जी से पूछा, ''महात्मा जी, यह बर्तन किस धातु का बना है, पूरा खजाना खाली हो गया लेकिन यह भरा ही नहीं।''

साधु बोले, ''यह मनुष्य की तृष्णा रूपी धातु से बना है। इसकी आवश्यकता कभी पूरी नहीं होती।'' ऐसा सुन राजा आश्चर्य में पड़ गये और साधु को विनम्रता से कहा, ''आपकी बात सुन मेरी उत्सुकता बढ़ गयी है। कृपा करके विस्तार से बताएं।''

साधु समझाने लगे, ''महाराज, तृष्णा ऐसा घड़ा है जो समस्त धरा के हीरे-जवाहरात आदि से भी नहीं भर सकता। यह तृष्णा मनुष्य को बन्दर की भांति नचाती है। कुत्ते की तरह दर-दर भटकाती रहती है। उल्लू के सदृश्य सूर्य के प्रकाश में भी अंधा कर देती है और मछली की भांति लोभ में फंसकर जीवन को संकट में डाल देती है। तृष्णा के अनेक रूपों का वर्णन कर पाना मेरी हद से बाहर है।''

यह सुनकर राजा की एकाएक नींद टूट गयी। इस स्वप्न से राजा को एक बड़ी सीख मिली। ❖

प्रेरक-प्रसंग : रामअवध राम

माँ की आज्ञा सर्वोपरि

बाल कहानी : श्यामसुन्दर 'सुमन'

उस समय लॉर्ड कर्जन कोलकाता के गवर्नर थे और आशुतोष मुखर्जी हाईकोर्ट के सम्मानित तथा ईमानदार न्यायाधीश। लॉर्ड कर्जन मुखर्जी का बहुत सम्मान करते थे। उस समय किसी भारतीय अधिकारी को लंदन जाने का अवसर मिलता तो उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती थी। मुखर्जी भी लंदन जाना चाहते थे लेकिन संकोची स्वभाव के कारण कभी यह इच्छा प्रकट नहीं करते थे। लेकिन मित्रों के बार-बार कहने पर उन्होंने लंदन जाने का मन बनाया। लॉर्ड कर्जन को जब इसका पता चला तो उन्होंने मुखर्जी से पहल करते हुए एक दिन कहा, 'मिस्टर मुखर्जी प्रसन्नता होगी कि इस बार लंदन जाने वालों की सूची में तुम्हारा नाम सबसे ऊपर होगा।'

मुखर्जी ने कहा– 'धन्यवाद, सर।'

मुखर्जी जब शाम को घर लौटे तो उन्होंने अपनी माँ को यह बात बताई। पहले तो माँ शान्त रही, फिर बोली– 'क्यों बेटा, मेरे पास रहने में तुमको दिक्कत हो रही है जो तुम मुझे अकेली छोड़कर लंदन जाना चाहते हो? कोई माँ अपने पुत्र को विदेश जाने की आज्ञा नहीं दे सकती। मैं तुम्हें विदेश नहीं जाने दूंगी।'

माँ की बात सुनकर मुखर्जी ने लंदन जाने का इरादा छोड़ दिया। दूसरे दिन वह सीधे लॉर्ड कर्जन के पास पहुँचे और कहा– 'सर! मैं लंदन नहीं जा सकता।'

लॉर्ड कर्जन चौंक कर बोले– 'आखिर क्यों? लंदन जाना तो भारतीय अपना गौरव समझते हैं।'

मुखर्जी ने कहा– 'आप ठीक कह रहे हैं, लेकिन मेरी माँ की इच्छा है। यह नहीं हो सकता।'

लॉर्ड कर्जन ने कहा– 'परन्तु तुम्हारी माँ की इच्छा तुम्हें नहीं रोक सकती, तुम्हें जाना ही होगा। अपनी माँ से जाकर कहो कि यह लार्ड कर्जन का आदेश है।'

मुखर्जी लॉर्ड कर्जन के रवैये से तिलमिला गए। उन्होंने अपनी जेब से एक कागज निकाला और उस पर कुछ लिखकर लॉर्ड को देते हुए कहा, 'यह रहा मेरा इस्तीफा।' इस्तीफे में लिखा था– 'मैं अपनी माँ की आज्ञा को आपके आदेश से ऊँचा मानता हूँ। अत: मेरा इस्तीफा स्वीकार करें।' लॉर्ड कर्जन ने मुखर्जी का इस्तीफा स्वीकार नहीं किया। ❖

लेखकों से अनुरोध

अगर आप सन्त निरंकारी मिशन की किसी भी पत्र-पत्रिका जैसे 'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' और 'एक नज़र' आदि में अपने लेख, कहानी, कविता, गीत और डिजाइनिंग आदि द्वारा योगदान देना चाहते हैं तो अपने लेखन से सम्बन्धित संक्षिप्त विवरण (प्रोफाइल) निम्नलिखित ईमेल आईडी पर भेज सकते हैं–

hduniya.hindi@nirankari.org

CC to

sn.new@nirankari.org

–प्रभारी, पत्रिका-प्रकाशन विभाग

उड़ीसा का राज्यपशु सांभर

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

सांभर दक्षिणी-पूर्वी एशिया में पाया जाने वाला एक अभिनव हिरन है। यह भारत, नेपाल, बर्मा, बांग्लादेश, श्रीलंका, मलाया, सुमात्रा, बोर्नियो, फिलीपाइन्स, इन्डोनेशिया तथा दक्षिणी चीन के बहुत बड़े भाग में देखने को मिलता है। अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय सांभर को एशिया से न्यूजीलैंड में ले जाया गया था, जहाँ अच्छी तरह फल-फूल रहा है।

सांभर भारत में पाये जाने वाले हिरनों में सबसे बड़ा है। इसकी कंधों तक ऊँचाई 150 सेन्टीमीटर तक होती है। यह पंजाब को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। इसे हिमालय पर्वत के साढ़े तीन हजार मीटर तक की ऊँचाई वाले पर्वतीय वनों में सरलता से देखा जा सकता है। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में यह जड़ाऊ के नाम से जाना जाता है। किसी समय मध्य भारत में बहुत बड़ी संख्या में सांभर पाये जाते थे, किन्तु जंगलों की अन्धाधुंध कटाई और शिकार के कारण इसकी अनेक जातियाँ पूरी तरह विलुप्त हो चुकी हैं और कुछ विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी हैं।

सांभर की तीन प्रमुख जातियाँ एवं सोलह उपजातियाँ हैं। इन सभी की शारीरिक संरचना, मृगशृंग (एन्टलर्स सींग) की संरचना एवं आकार में पर्याप्त अन्तर होता है। सांभर की तीन प्रमुख जातियाँ ये हैं- भारतीय सांभर, सुण्डा सांभर और फिलीपाइन्स का सांभर। इनमें भारतीय सांभर सबसे बड़ा और भारी होता है तथा यह भारत एवं एशिया के सर्वाधिक क्षेत्रों में फैला हुआ है। इसके मृग शृंग भी सबसे सुन्दर होते हैं। भारत में सांभर की छः उपजातियाँ पायी जाती हैं। इनमें मध्य प्रदेश के नर्मदा और ताप्ती के जंगलों का सांभर सबसे बड़ा और सुन्दर होता है। दक्षिण भारत का सांभर सबसे छोटा होता है, किन्तु सुन्दरता में यह मध्य प्रदेश के सांभर से कम नहीं होता।

सांभर के पैर लम्बे और मजबूत होते हैं एवं इसके खुरों की संरचना इस प्रकार होती है कि इसके चलने की आवाज नहीं होती। इसकी पूँछ

मोटी एवं मध्यम आकार की तथा बालयुक्त होती है। सांभर का सिर सामान्य होता है तथा सिर की तुलना में कान बड़े और चौड़े होते हैं। इसकी दृष्टि साधारण होती है, किन्तु घ्राणशक्ति एवं श्रवणशक्ति बहुत तेज होती है। अपनी घ्राणशक्ति और श्रवणशक्ति के बल पर यह खतरा निकट होने पर अपने बचाव के लिये उसकी स्थिति मालूम कर लेता है और सतर्क हो जाता है।

मादा सांभर का आकार नर से छोटा होता है। इसके न तो मृगशृंग होते हैं और न ही गर्दन पर बालों की अयाल। इसके शरीर का रंग भी नर से हल्का होता है।

सांभर के मृगशृंग अन्य हिरनों की तुलना में काफी बड़े और शानदार होते हैं। इन्हीं मृगशृंगों के लिये इसका इतना अधिक शिकार किया गया है कि यह विलुप्ति के कगार पर पहुँच गया है। नर सांभर के तीन-तीन भागों वाले दो बड़े मृग शृंग होते हैं जो चार वर्ष की आयु से निकलना आरम्भ होते हैं। इन मृग शृंगों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि ये प्रतिवर्ष गिर जाते हैं, किन्तु कभी-कभी दो वर्षों में गिरते हैं। सांभर के मृगशृंग फैले हुए, मोटे तथा मजबूत होते हैं। इसके दोनों मृगशृंगों की शाखाएं तो समान होती हैं, किन्तु इनका विकास एक जैसा नहीं होता।

सांभर के मृग शृंग आरम्भ में कोमल और कमजोर होते हैं, किन्तु परिपक्व होने पर मजबूत और कठोर हो जाते हैं। यह प्राय: अपने परिपक्व मृगशृंगों को वृक्षों के तनों से रगड़कर उन्हें साफ करता रहता है। सांभर के जीवन में इसके मृग शृंगों का विशेष महत्व है। यह इनके द्वारा शत्रुओं से अपनी रक्षा के साथ ही साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों से अपने क्षेत्र की रक्षा भी करता है।

सांभर निशाचर है अर्थात् सूर्यास्त के बाद भोजन की खोज में निकलता है और रातभर विभिन्न प्रकार की घास-फूस, फल-फूल, पत्तियों, वृक्षों की कोपलें तथा कोमल शाखाएं आदि खाता है। यह कभी-कभी दिन के समय भी इधर-उधर घूमते हुए देखने को मिल जाता है। सांभर खेतों के निकट रहना बहुत पसन्द करता है और प्राय: रात्रि के समय खेतों में घुसकर फसलों को काफी नुकसान पहुँचाता है। यह जमीन पर उगी हुई घास तथा छोटे-छोटे पौधे आदि बड़े आराम से चरता है और इसके साथ ही अपने दोनों पैरों पर खड़े होकर ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की पत्तियाँ आदि भी खाता है। सांभर पहाड़ी जंगलों, घाटियों, झीलों आदि के निकट रहना पसन्द करता है और पानी के निकट ही अपना निवास बनाता है।

सांभर एक निडर हिरन है, किन्तु हमेशा सतर्क रहता है। यह सियारों और जंगली बिल्लियों पर तो ध्यान ही नहीं देता, किन्तु शेर आदि के निकट होने पर 'पोंक और धेंक' जैसी आवाजें निकालता है। यह खतरे के पास होने का संकेत है। सांभर यदि इस प्रकार की आवाजें रूक-रूककर तीन बार निकाले तो यह निश्चित हो जाता है कि पास ही कहीं पर शेर है। शिकार की खोज में निकले हिंसक जीव का पता लगते ही यह स्वयं भी सतर्क हो जाता है और अन्य वन्य जीवों को भी सावधान कर देता है।

प्रकृति ने सांभर की सुरक्षा के लिये अनेक उपाय किये हैं। यह एक विशालकाय एवं भारी-भरकम हिरन है, फिर भी इसके पैरों की संरचना इस प्रकार होती है कि इसके चलने से कोई आवाज नहीं होती, जिससे यह हिंसक जीवों से बचा रहता है। सांभर यह जानता है कि भागते समय उसके मृगशृंग झाड़ियों में फंस सकते हैं, अत: वह ऐसी दिशा में भागता है जहाँ मृगशृंग के झाड़ियों में फंसने की आशंका न हो। सांभर पानी पीने के लिए जलस्रोतों के निकट जाते समय भी

पूरी तरह सतर्क रहता है, क्योंकि इन स्थानों पर हिंसक जीवों के पाये जाने की सर्वाधिक आशंका रहती है। सांभर के शरीर का रंग भी इसकी सुरक्षा में काफी योग देता है।

सांभर का प्रमुख शत्रु है-शेर। यह सांभर का शिकार प्रायः जलस्रोतों के निकट करता है। शेर सांभर का शिकार करने के लिये सांभर का रास्ता मालूम कर लेता है और रास्ते में किसी गड्ढे में छिपकर बैठ जाता है तथा सांभर के पचास मीटर या इससे भी अधिक निकट आने पर उस पर आक्रमण करके उसे अपना आहार बना लेता है। विख्यात भारतीय जीव वैज्ञानिक कैलाश सांखला के अनुसार- 'शेरों के द्वारा 80 प्रतिशत से अधिक सांभर जलस्रोतों के निकट ही मारे जाते हैं। शेर द्वारा मारे गये सांभरों में सबसे अधिक संख्या मादाओं तथा बच्चों की होती है एवं प्रायः वे ही नर सांभर मारे जाते हैं, जिनके मृगशृंग नहीं होते।

सांभर के दूसरे शत्रु हैं-जंगली कुत्ते। ये झुण्ड बनाकर सांभर का पीछा करते हैं और उसे तड़पा-तड़पाकर मारते हैं। सांभर इनसे बचने के लिये मृगशृंगों का उपयोग करता है एवं कभी-कभी पैरों से वार करता है। इसके पैरों की मार इतनी घातक होती है कि कभी-कभी जंगली कुत्ते मर भी जाते हैं, किन्तु झुण्ड में रहने के कारण वे अन्ततः सांभर को मारने में सफल हो जाते हैं।

मादा सांभर का गर्भकाल 5 से 6 माह तक होता है। मादा एक बच्चे को जन्म देती है। इनमें जुड़वा बच्चे होना अपवाद है। मैदानी भागों में मादा अप्रैल-मई में बच्चे को जन्म देती है एवं हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में जुलाई-अगस्त के महीनों में। मादा सांभर हमेशा घनी झाड़ियों के मध्य बच्चे को जन्म देती है तथा हिंसक पशुओं से बचाने के लिये उसे छिपाकर रखती है। जन्म के समय बच्चे के शरीर पर धब्बे और चित्तियां होती हैं जो धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं। इसका पालन-पोषण मादा ही करती है तथा वयस्क होने तक उसे अपने साथ रखती है। सांभर का बच्चा चार वर्ष में वयस्क एवं प्रजनन के योग्य हो जाता है। इसके सर पर निकलने वाले मृगशृंग इसके वयस्क होने का प्रमाण होते हैं। सांभर का जीवनकाल 12 वर्ष से 20 वर्ष तक होता है। इसे सरलता से पालतू बनाया जा सकता है और चिड़ियाघरों में रखा जा सकता है। ❖

जिम्मेदारी किसकी?

कहानी : दर्शन सिंह 'आशट'

बबलू बेहद लाड़ला था। अब वह पाँच वर्ष का हो गया था। स्कूल से उसे डर लगता था। एक दिन उसकी मम्मी उसे एक अच्छे स्कूल में दाखिल करवाने गई तो उसने रो-रोकर आसमान सर पर उठा लिया। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। फिर तीसरे और चौथे दिन मम्मी उसे कभी चॉकलेट, कभी टाफियां देकर मनाती। लेकिन बबलू स्कूल जाने से पहले ही चॉकलेट और टाफियां चट कर जाता। स्कूल में प्रवेश करते ही उसे पता चल जाता कि मम्मी अब उसे छोड़कर घर चली जायेगी। कक्षा के बच्चों में सबसे ज्यादा चिल्लाने वाला बबलू ही था।

बबलू थोड़ा और बड़ा हुआ तो उसने रोकर स्कूल जाना बंद कर दिया। वह रिक्शा में स्कूल जाने लगा। पड़ोस से ही रिक्शा में उसके दो और दोस्त भी साथ जाते थे।

बबलू का ज्यादा ध्यान शरारतों की ओर ही लगा रहता। उसकी किताबें और कापियों के पृष्ठ प्राय: फटे ही रहते।

एक दिन नितिका मैडम कक्षा में अभी नहीं आई थीं। क्लास-रूम में शोरगुल मचा हुआ था। बबलू अपनी एक कापी के पृष्ठ फाड़-फाड़कर जहाज बनाकर उड़ाता हुआ चिल्ला रहा था। उसके कागजी जहाज कमरे के दरवाजे के बाहर तक पहुँच रहे थे। बबलू ने एक और जहाज बनाकर दरवाजे की ओर जोर से उड़ाया। बिल्कुल उसी समय नितिका मैडम ने कमरे में प्रवेश किया। जहाज की नोक उनके माथे पर लगी। नितिका मैडम एकदम घबरा गईं। शुक्र है कि उनकी आंख बच गई। गुस्से में उनके माथे पर बल पड़ गये।

नितिका मैडम ने पता लगा लिया कि जहाज बबलू का ही था। उन्होंने उसे पकड़कर तत्काल कमरे से बाहर निकाल दिया और बोलीं, "बाहर खड़े रहो। तुम्हारे लिए यही सजा है।"

बबलू सिसकने लगा। कुछ देर बाद नितिका मैडम ने उसे अन्दर बुला लिया। उससे वादा लिया कि वह कमरे में कभी ऐसी हरकत नहीं करेगा लेकिन बबलू की शरारत ज्यों की त्यों ही रही।

वार्षिक परीक्षा का परिणाम निकल चुका था। बबलू के अच्छे अंक तो नहीं आ सके लेकिन इतना जरूर था कि वह पास हो गया।

एक दिन मम्मी बबलू की कापियों में स्कूल का काम देखने लगी तो चकित रह गई। उसकी कोई भी कापी ऐसी न थी जिसके पृष्ठ फटे हुए न हों। पता चला कि उसने अपनी कापियों के पृष्ठ जहाज, किश्तियां और गेंदें बनाकर

नष्ट किये हैं। स्कूल आंगन की कोई भी दिशा ऐसी नहीं थी जिस तरफ उसका जहाज न उड़ा हो। स्कूल का माली क्यारियों और फूलों की झाड़ियों की शाखाओं में फंसे हुए कागज के टुकड़े निकालता। कई बार कागज के टुकड़े एक स्थान पर जमा हो जाते। परिणामस्वरूप पानी बाहर बहने लगता।

बबलू को दादा जी से बहुत स्नेह था। एक दो दिन बाद वह दादा जी के साथ शाम को पार्क में घूमने जरूर जाता।

दादा जी बहुत सफाई पसंद थे।

एक दिन बबलू के दादा जी उसे पार्क में लेकर गये। उन्होंने देखा कि वहाँ कागज के कुछ टुकड़े बिखरे पड़े थे।

लेकिन यह क्या? सैर करते-करते दादा जी कागज के टुकड़े उठाने लगे।

दादा जी, ये क्या कर रहे हो? वो देखो सामने। मेरे दोस्त बंटी के पापा आ रहे हैं। क्या सोचेंगे? तुम कोई ....?

यह सुनकर दादा जी हँस पड़े। कहने लगे, ''बबलू, मैं समझ गया हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो? यह पार्क हम सबके लिए ही बनाया गया है। हम यहाँ आकर सैर करते हैं। ताजी और खुली हवा लेते हैं। फूलों को देखकर हमारा मन हर्षाता है। जिस किसी ने भी खा-पीकर कागज के लिफाफे यहाँ फेंके हैं, मैं उसे मूर्ख कहूँगा। बेटा, मैं बिखरे कागजों को उठाकर कूड़ेदान में फेंककर छोटा नहीं हो जाऊंगा। यदि हर कोई यही सोच ले कि यह मेरा काम नहीं है तो पार्क में गंदगी बढ़ती ही जायेगी।''

इतने में बंटी के पापा बबलू के दादा जी के पास आये। उन्होंने उन्हें कागज के बिखरे टुकड़े उठाते देख लिया था।

''अंकल, लाओ मुझे पकड़ाओ ये कागज के टुकड़े। मैं इन्हें कूड़ेदान में फेंक आता हूँ।'' यह कहकर बंटी के पापा ने उनके हाथ से कागज पकड़े और कूड़ेदान में फेंकने के लिए चले गये।

घर लौटते समय बबलू इसी घटना के बारे में सोचता रहा।

अगले दिन बबलू स्कूल गया। उसने देखा, फूलों की क्यारियों में कुछ कागज के टुकड़े बिखरे पड़े थे। ये वही कागज थे जो कल बबलू ने अपने मनोरंजन करने के लिये जहाज वगैरह बनाकर फेंके थे। उसने एक-एक करके उन टुकड़ों को उठाया और कूड़ेदान में फेंक आया।

''शाबाश।'' अचानक ही बबलू के कानों में यह बोल सुनाई दिये। साथ ही किसी ने उसकी पीठ भी थपथपाई।

बबलू ने पीछे मुड़कर देखा, नितिका मैडम थी। उन्होंने बबलू के सिर पर हाथ फेरा। ❖

क्या आप जानते हैं ?

- संसार की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीलंका की सीरीमावो भण्डारनायके थी।
- चीन की दीवार को मजबूत बनाने के लिए ईंटों में चावल के आटे का प्रयोग किया गया था।
- हाथी एकमात्र जानवर है जो कूद नहीं सकता।
- प्रतिक्षण सूर्य के गर्भ से निकलने वाली ऊर्जा सौ अरब परमाणु बमों के बराबर होती है।
- घोंघे के 2500 दांत तक उग सकते हैं।
- जिराफ प्रतिदिन आधे घंटे ही नींद लेते हैं।
- पानी की गहराई तक डुबकी लगाने के लिए मगरमच्छ पत्थर निगल लेते हैं।
- रेडियो को पाँच करोड़ लोगों तक पहुँचने में 38 वर्ष लगे थे जबकि टेलीविजन को इतने ही लोगों तक पहुँचने में तेरह वर्ष लगे। इंटरनेट केवल चार वर्षों में ही पाँच करोड़ लोगों तक पहुँच गया।
- भारत के सुपर कम्प्यूटर का नाम 'परम' है।
- प्राचीन यूनान में अपोलो को सूर्य का देवता भी कहा जाता था।
- यूनिसेफ का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है।
- रेफ्लेसिया के फूल की रोचक बात यह है कि इसकी कली फूल बनने के पहले एक बड़े पत्तागोभी के आकार में बढ़ती है। इसके फूल बारिश के मौसम में रात के समय खिलते हैं।
- पेंग्विन अंटार्कटिक सागर में 870 फीट की गहराई तक पहुँचकर 18 मिनट तक डूबा रह सकता है।
- मानव दाँत चट्टान जितने कठोर होते हैं।
- कुछ कीड़े भोजन न मिलने पर खुद के अंग ही खा जाते हैं।
- मिस्र के पिरामिडों में फैरो बादशाह की कब्र में पाया गया शहद जब खोजी वैज्ञानिकों द्वारा चखा गया, तब भी वह उतना ही स्वादिष्ट और शुद्ध था। बस उसे थोड़ा गर्म करने की जरूरत थी।
- हमारी अंगुलियों के निशान भिन्न होते हैं।
- आलू की खेती में विश्व में तीसरा स्थान रखने वाला भारत 16वीं सदी से पहले इसके विषय में जानता तक नहीं था।
- कालीदास के गीतकाव्य ऋतुसंहार के 6 सर्गों में उत्तर भारत की 6 ऋतुओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।
- विश्व की सबसे प्राचीन धार्मिक पुस्तक ऋग्वेद है।
- विश्व में सर्वप्रथम कागजी मुद्रा का आविष्कार चीन में हुआ था।
- विश्व का सबसे छोटा पक्षी हमिंग बर्ड है।
- विश्व की सबसे बड़ी नदी नील नदी है।
- सबसे बड़ा जल-जन्तु ब्लू व्हेल है।
- विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा मरुस्थल है।
- सबसे बड़ा महासागर प्रशान्त महासागर है।
- सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला हिमालय है।

-संग्रहकर्ता : विकास कुमार

आगे बढ़ना सीखो

बाल कविता : डॉ. रामदुलार सिंह

सूरज के उगने से पहले,
प्रतिदिन जगना सीखो।
चीं-चीं करती चिड़ियों से तुम,
गीत मिलन के सीखो।।

गुन-गुन करते भौरों से तुम,
मधुर गीत गाना सीखो।
फूलों सा खिलकर जीवन में,
तुम हरदम हँसना सीखो।।

बड़े सुजान को सदा प्रेम से,
शीश झुकाना सीखो।
नदियों के कल-कल निनाद से,
आगे बढ़ना सीखो।।

अच्छे बच्चे

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

हँसते-गाते आगे बढ़ते,
कष्टों में न पीछे हटते।
सच्चाई के पथ पर चलते,
जो अच्छे बच्चे होते हैं।।

बुराई से रहते दूर सदा,
पाप-कपट से बचते हैं।
जग के तम को दूर भगाते,
दीपक बनकर जलते हैं।।

मीठी-मीठी वाणी बोलें,
समय कभी न व्यर्थ में खोते।
करते नित सम्मान बड़ों का,
जो अच्छे बच्चे होते हैं।।

बुलबुल का रंगीन संसार

गाने और मधुर तराने छेड़ने वाले पक्षियों में बुलबुल का स्थान सबसे ऊँचा है। संसार के विभिन्न भागों में जो बुलबुल पाई जाती है, उन में फारस की 'हजार दास्तां' बुलबुल सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं कि वह हजार तरह से गाती है। रातभर उसके छोटे कंठ से अनेक तरह के मधुर स्वर निकलते रहते हैं, जिन्हें सुनकर लोग आनंद विभोर हो उठते हैं। इस लिहाज से दूसरी बुलबुलें नाम-मात्र की बुलबुलें होती हैं। उनके स्वर में इतनी मिठास और ऐसी मस्ती कदापि नहीं होती। इतना जरूर है कि शाम के समय पेड़ों पर बैठी जब वे चहकती हैं तो उनका बोल भी कानों को मीठा लगता है।

चुलबुली और चहकने वाली चिड़िया : देखने में बुलबुल गौरैया जैसी लेकिन आकार में उससे कुछ बड़ी होती है। इसके सिर पर एक कलगी या चोटी-सी होती है, जिस कारण यह देखने में गौरैया से अधिक सुन्दर और मोहक लगती है। यह कलगी जाति विशेष में छोटी-बड़ी होती है। देर तक एक जगह चुप बैठे रहना इसे सबसे ज्यादा अखरता है। इसलिए यह प्रायः हमेशा उछलकूद करती और चहचहाती ही मिलती है।

हमारे देश में बुलबुल की अनेक जातियां और उप-जातियां मिलती हैं लेकिन इन सबमें गुलदुम और सिपाही बुलबुल ही प्रसिद्ध हैं।

गुलदुम बुलबुल : यह बुलबुल यहाँ की सामान्य और बहुत प्रसिद्ध बुलबुल है, जो लगभग सभी जगह पाई जाती है। कद में 9 इंच लम्बी इस बुलबुल की पूंछ के नीचे के परों का रंग सुर्ख होता है, जिस कारण यह गुलदुम के नाम से लोकप्रिय है। इसके सिर का तुर्रा, गला और पूंछ गहरी काली तथा शरीर का बाकी हिस्सा भूरे रंग का होता है। डैने भी भूरे रंग के सफेद किनारीदार होते हैं। दुम का सिरा सफेद तथा नीचे का गहरा लाल होता है। इसके नर और मादा दोनों एक-से होते हैं। यह बहुत खिलाड़ी और लड़ाकू होती है। इसकी मुख्य उप-जातियों स्याहा और पंजाब की बर्रहा बुलबुल प्रसिद्ध है।

सिपाही बुलबुल : यह बुलबुल देखने में बहुत सुंदर और तराई के मैदानों से लेकर मध्य प्रदेश तक पाई जाती है। इसके दोनों गालों पर सुर्ख

बालों के गुलमुच्छ होते हैं, इसी कारण इसे सिपाही बुलबुल कहते हैं। इसकी पीठ और डैने मटमैले भूरे, छाती सफेद और पैर काले होते हैं। पूंछ गहरे भूरे रंग की होती है और उसका निचला हिस्सा गुलदुम बुलबुल की तरह गाढ़ा लाल होता है।

इसके अलावा भी और कई तरह की बुलबुलें पाई जाती हैं। एक सफेद गालों वाली पहाड़ी बुलबुल, जो पहाड़ों पर 7000 फुट की ऊँचाई तक मिलती है। दूसरी जर्द बुलबुल होती है। यह पीले रंग की चिड़िया है और अधिकतर जंगलों में पाई जाती है। इसकी पूंछ और डैने भूरे होते हैं। गर्दन का रंग स्याह रहता है।

मछरिया बुलबुल : यह बुलबुल उत्तर से दक्षिण तक पाई जाती है। आँख के ऊपरी भाग में मछलियों जैसी पट्टियों के कारण यह मछरिया बुलबुल कहलाती है। कद में 8 इंच लम्बी इस चिड़िया के शरीर का ऊपरी भाग हरा-सा, सिर स्लेटी और डैने भूरे होते हैं। पूंछ भी भूरी होती है और उसका निचला भाग पीला होता है।

बारहमासी पक्षी : खुले मैदानों की अपेक्षा बुलबुल को बाग या झाड़ों में रहना ज्यादा पसंद है। वैसे तो बुलबुल कीड़े-मकोड़े, फल-फूल आदि सभी कुछ खा लेती है, लेकिन लाल रंग के छोटे-छोटे फल खाना इसे बहुत प्रिय है। ये फल यदि पूरी तरह से पके हों तो यह उन्हें तेजी से चट कर जाती हैं। कभी-कभी यह धान के खेत उजाड़ देती है और इस तरह यह खेती को काफी नुकसान पहुँचाती है।

मार्च से सितम्बर तक बुलबुल घोंसला बनाती है और एक बार में दो या तीन अण्डे देती है। अण्डों का रंग हल्का गुलाबी होता है और उस पर बैंगनी रंग की चित्तियां पड़ी रहती हैं। यह साल में लगभग दो बार अण्डे देती हैं।

अपना घोंसला बनाने के लिए बुलबुल अधिकतर नीची झाड़ियां, घास, खर के ढेर अथवा कभी-कभी मकान के बरामदों में भी अपना घास-फूस, पत्तियां और मकड़ी के जाले काम में लाती है। इसका घोंसला देखने में बहुत सुन्दर और प्यालेनुमा होता है। इसे नर और मादा दोनों मिलकर बनाते हैं। वह दो-तीन दिन में बनकर तैयार हो जाता है। जमीन के पास घोंसला होने के कारण सांप, नेवले आदि अक्सर इनके अण्डों को चटकर जाते हैं। ❖

- दीपांशु जैन

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन: अजय कालड़ा

मैं तो बाहर चली। मुझे तो बहुत गर्मी लग रही है। बॉय मम्मी मैं जा रही हूँ।

क्यों ना मैं किसी स्विमिंग पूल के पास जाऊँ? वहाँ तो पानी भी होगा और ठंडक भी।

अरे! यहाँ तो बहुत अच्छा लग रहा है क्यों न मैं मोंटू, मौली और चिंटू को भी यहाँ बुला लूँ? मैं अभी फ़ोन करती हूँ।

क्या तुम लोग भी स्वीमिंग पुल के पास आना चाहोगे। यहाँ बहुत ठंडक है।
हाँ! हम लोग भी वहाँ आते हैं। हम सब मिलकर बहुत मज़े करेंगे और गर्मी का पूरा लुत्फ उठाएँगे।

किट्टी! हम सब आ गए।
अरे! यहाँ तो सच में बहुत अच्छा लग रहा है।

क्यों न! हम सब मिलकर बॉल खेले?
हाँ! हाँ!! क्यों नहीं!

अरे! बॉल तो पानी में गई। अब कैसे निकलेगी?
अरे! इसमें परेशान होने वाली क्या बात है। मुझे स्विमिंग आती है। मैं निकाल सकती हूँ।
अरे वाह! किट्टी तुम तो बहुत होशियार हो।
ये लो बॉल आ गई।
इसमें होशियार वाली क्या बात है। हमें समय रहते सब काम आने चाहिए। हमें कभी भी किसी भी काम की जरूरत पड़ सकती है।
क्या तुम सब कोल्डड्रिंक पीओगे?
हाँ! हाँ! क्यों नहीं?
अब हम भी स्विमिंग सीखेंगे।
किट्टी! आज तो सच में बहुत मज़ा आ गया। हम सब गर्मी के दिनों में भी इतना मज़ा कर सकते हैं। यह कभी सोचा न था।

कभी न भूलो

❖ सम्पूर्ण विश्व मुझमें ही व्याप्त है तथा मैं विश्व के समस्त जीवों में ही व्याप्त हूँ।
– भगवान श्रीकृष्ण

❖ भय और वैर से मुक्ति पानी हो तो 'अहिंसा' या 'प्रेम' का मार्ग अपनाना होगा। इसके सिवाय दूसरा कोई मार्ग हो ही नहीं सकता।
– भगवान महावीर

❖ फूल खिलने दो मधुमक्खियां अपने आप उसके पास आ जायेंगी। चरित्रवान बनो जगत अपने आप मुग्ध हो जायेगा।
– रामकृष्ण परमहंस

❖ महानता दूसरों के दोषों को छिपाती है, तुच्छता दूसरे के दोषों को निकालती है।
– तिरुवल्लुवर

❖ धर्म रहित विज्ञान लंगड़ा है व विज्ञान रहित धर्म अंधा। **– आइंस्टीन**

❖ जो आत्म-संयमी नहीं है वह स्वतंत्र नहीं है।
– पाइथागोरस

❖ हमारे मन के विचार कर्म के पथ-प्रदर्शक होते हैं। **– प्रेमचन्द**

❖ कोई भी अच्छा कार्य या आदर्श कभी नहीं मिटता। वह मानव जाति में सदा जीवित रहता है। **– सैमुअल स्माइल्स**

❖ मनुष्य को हमेशा ही सच्चाई का साथ देना चाहिए। **– रवीन्द्रनाथ टैगोर**

❖ ज्ञान का उपयोग हमेशा ही समाज के हित में करना चाहिए। **– स्वामी विवेकानन्द**

❖ महान कार्य करने के लिए पहली जरूरी चीज है– आत्मविश्वास **– जानसन**

❖ हर काम में विजय प्राप्त करने के लिए एकाग्रचित्त होना जरूरी है। **– माले**

❖ अगर शान्ति आपको अपने अन्दर से नहीं मिलती तो उसको बाहर से खोजना बेकार है।
– रस्किन

❖ प्रार्थना (प्रभु-सुमिरण) आत्मा की पुकार है, इसे करो। **– महात्मा गाँधी**

❖ संसार ही महापुरुष को ढूंढ़ता है न कि महापुरुष संसार को। **– कालीदास**

❖ जो अपनी इज्जत करते हैं उनकी सब इज्जत करते हैं। **– बेकन्स फील्ड**

❖ गुण न हो तो रूप व्यर्थ है। विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है, उपयोग न हो तो धन व्यर्थ है। भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है, होश न हो तो जोश व्यर्थ है। परोपकार न करने वाले का तो जीवन ही व्यर्थ है। **– अज्ञात**

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल

प्यार के दो बोल

कविता : रंजना चौधरी

खुशियों के तुम फूल बांटकर,
जग की बगिया को महकाओ।
जिनकी आँखों में आंसू हों,
उनको भइया गले लगाओ।।

सुख बांटो, दुख बांटो सबके,
बांटो प्रेम और प्रीत को।
सबके मन तुम जीतो भाई,
गाओ प्यार के गीत को।।

सूरज, चाँद-सितारे बनकर,
तम को सदा मिटाए रखना।
दुनिया के आंगन में तुम,
खुशियों के दीप जलाए रखना।।

परहित करके जीता जग में,
वह महान कहलाता है।
बनकर सबकी आँख का तारा,
आदर सबसे पाता है।।

राम बनकर तुम,
मन के रावण को मिटाओ।
खुशियों के तुम फूल बांटकर,
जग की बगिया को महकाओ।।

माता-पिता

बाल कविता : अंशु अडवानी

माँ की ममता सबसे प्यारी।
सारे जग में सबसे न्यारी।
सबके दिल को भाने वाली,
प्यार का मोल सिखाने वाली।।

पिता का प्यार भी है अनोखा।
सारे जीवन को उमंगों से भरता।
हाथ पकड़कर चलना सिखाये,
जीवन की नई राह दिखाये।।

मात पिता की सेवा करना।
प्यार नम्रता में ही चलना।
सदाचार अपनाते रहना,
जीवन खुशियों से तुम भरना।।

तीन बातें

बोध कथा : राजेन्द्र परदेसी

बहुत समय पहले रामनगर में एक सेठ रहता था। उसका नाम रामकृपाल था। सेठ रामकृपाल ने अपनी कार्यकुशलता और बुद्धिमानी से काफी धन अर्जित किया पर उसका लड़का बालकराम अपने पिता के व्यापार में बिल्कुल रुचि नहीं लेता था। जिसके कारण व्यापार के गूढ़ रहस्य को वह समझ नहीं पाया था। उसी से सेठ रामकृपाल बहुत चिंतित रहता था कि उसके मरने के बाद व्यापार का क्या होगा।

एक बार सेठ रामकृपाल बहुत बीमार हुआ तो उसने अनुभव किया कि अब उसका बचना मुश्किल है तो अपने बेटे बालकराम को पास बुलाकर कहा– बेटा! मैंने जो भी धन कमाया है, वह सब तुम्हारा है, इसे संभाल कर रखोगे तो तुम हमेशा सुखी रहोगे।

पिता की बात सुनकर बालकराम बोला– इसके लिए मुझे क्या करना होगा?

सेठ रामकृपाल ने कहा– बेटा, मेरी तीन बातों को अगर तुम मानोगे तो तुम्हें व्यापार में कभी नुकसान नहीं होगा और तुम्हारा धन भी बढ़ता रहेगा।

–वे कौन-सी बातें हैं– बालकराम ने पूछा।

सेठ रामकृपाल ने बताया– पहली बात यह है कि व्यापार के लिए हमेशा छाया में जाना और छाया में ही आना। दूसरी बात यह है कि हमेशा मीठा ही खाना। तीसरी बात और अंतिम सलाह यह है कि किसी को कुछ देकर मांगना नहीं। इतना कहकर सेठ रामकृपाल परलोक सिधार गया।

जब पिता का क्रियाकर्म समाप्त हो गया तो एक दिन बालकराम ने अपने नौकर को बुलाकर आदेश दिया कि घर से दुकान तक का रास्ता टीन की चादरों से ढक दो जिससे छाया में आयें-जायें। नौकर ने बालकराम के आदेश का तुरन्त पालन किया और रास्ते को ढक दिया।

अब बालकराम उसी टीन की छांव में घर से दुकान तक आने-जाने लगा, वह खाने में महंगी से महंगी मिठाइयां लेता, व्यापार में जिन्हें सामान उधार देता, उनसे पैसे मांगने न जाता। इस कारण कुछ दिनों में ही उसकी आर्थिक स्थिति बहुत

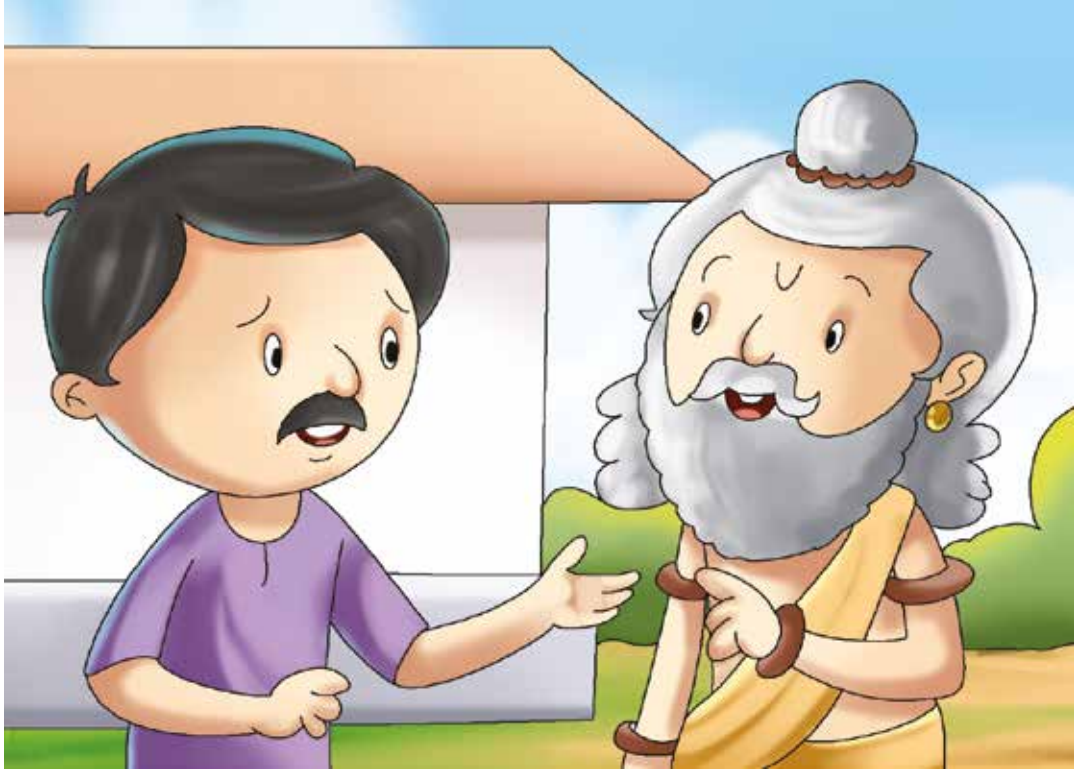

खराब हो गयी, अधिक मिठाईयां खाने से पेट भी गड़बड़ रहने लगा, स्वास्थ्य ठीक न रहता, नौबत यह आयी कि पिता द्वारा अर्जित सारा धन बालकराम गंवा बैठा।

एक दिन बालकराम अपने घर के सामने उदास बैठा था, एक सन्त-महात्मा उधर से निकला। महात्मा ने उसे उदास देखकर पूछा– तुम इतने उदास क्यों हो? बताओ, शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं।

महात्मा से सहानुभूति के शब्द सुनकर बालकराम बोला– मेरे पिता ने मरते समय मुझे तीन सलाह दी थीं। पहली सलाह थी कि छाया में जाना और छाया में ही आना, दूसरी सलाह थी कि हमेशा मीठा ही खाना और तीसरी तथा अंतिम सलाह थी कि किसी को कुछ देकर मांगना नहीं। मैंने उन्हीं की सलाह पर चलकर इस स्थिति में पहुँच गया हूँ कि आज मुझे और मेरे परिवार को खाने के लाले पड़े हुए हैं, पहनने के लिए वस्त्र भी नहीं हैं।

बालकराम की बातें सुनकर महात्मा जोर से हँसा और बोला– नादान! तूने अपने पिता की बातों का बहुत अच्छा अर्थ लगाया।

महात्मा का यह व्यंग्य बालकराम को अच्छा नहीं लगा। उसने मन में सोचा कि यह कैसा सन्त-महात्मा है जो दूसरों की पीड़ा कम करने का उपाय बताने के बजाय उसका मजाक उड़ा रहा है। फिर भी स्वयं पर नियंत्रण रखकर पूछा– मेरे पिता की बातों का और क्या अर्थ था?

महात्मा बोला– तुम्हारे पिता ने छाया में चलने की सलाह दी थी। इसका अर्थ है कि अपनी दुकान पर सुबह ही चले जाना और शाम होने पर ही वापस आना। हमेशा मीठा ही खाने का अर्थ है कि सदा संतोषरूपी मीठा फल ही खाना, किसी को देकर मांगने न जाने का अर्थ है कि व्यापार में किसी को उधार भी देना तो उसके बदले उसकी कोई चीज गिरवी जरूर रख लेना, जिससे तुम्हें पैसा वापस मांगने नहीं जाना पड़े। बल्कि उधार लेने वाला स्वयं ही अपनी चीज छुड़ाने के लिए तुम्हारे पास आये। इतना कह महात्मा बोला– अगर तुम अपने पिता की बातों का सही अर्थ लगाते तो तुम्हें कभी भी यह दिन देखने न पड़ते।

अब बालकराम अपने पिता की बातों का गूढ़ रहस्य जान गया था। वह उसी पर पुनः चलने लगा। कुछ ही दिनों में उसका व्यापार चलने लगा और धीरे-धीरे वह अपने पिता की तरह फिर से धनवान बन गया। ❖

स्टेथोस्कोप का जन्म

विज्ञान कथा : राधेलाल 'नवचक्र'

सेठ अमीरचंद ने अपने तीनों पुत्रों को अध्यापक विजयसेन के हवाले करते हुए कहा कि आप विज्ञान के सुयोग्य अध्यापक हैं, मेरे इन लड़कों में विज्ञान के प्रति बिल्कुल अभिरूचि नहीं है। आप इनमें किसी तरह रुचि जगाइए।

''आप बेफिक्र रहें!'' अध्यापक विजयसेन ने भरोसा दिया।

दूसरे दिन वह सेठ जी के तीनों पुत्रों को लेकर अध्यापक विजयसेन बगीचे में चले गए। वहाँ उन्होंने तरह-तरह के पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों को देखा। फिर वे नदी के किनारे जा निकले। जब वे घूम-फिरकर काफी थक गए तो आराम करने के लिए एक पेड़ की छांव में जा बैठे।

थोड़ी देर बाद अध्यापक वियजसेन ने तीनों से एक साथ पूछा, ''क्या तुमने कभी स्टेथोस्कोप देखा है?''

''हाँ, देखा है।'' तीनों चिहुंक उठे।

''कहाँ?'' सवाल उठा।

''प्रत्येक डॉक्टर के पास।'' शशि ने जवाब दिया।

''सही कहा,'' अध्यापक महोदय ने उसकी पीठ थपथपायी। फिर बोले, ''सुमन तुम बता सकते हो, डॉक्टर उसका क्या उपयोग करता है?''

''उसकी मदद से डॉक्टर मरीजों के हृदय की धड़कन सुनता है।''

''अरे वाह!'' अध्यापक ने उसे शबाशी दी, ''तुम तो खूब जानते हो।''

अपनी सराहना सुनकर सुमन खुश हो उठा। मगर सन्तोष का इन सब बातों में तनिक भी मन नहीं लग रहा था। वह झट बोल पड़ा, ''सर, कोई कहानी सुनाइए न!''

कहानी सुनाने की बात पर शशि और सुमन ने भी जिद्द पकड़ ली, ''हाँ, हाँ, कहानी सुनाइए सर।''

अध्यापक ने तुरंत कुछ सोचा, फिर सब से पूछा, ''कहानी जरूर सुनाऊँगा। पहले यह बताओ कि स्टेथोस्कोप बना कैसे?''

''हमें नहीं मालूम'', तीनों ने नाराजगी दिखाई।

''बहुत मजेदार कहानी है इसकी,'' अध्यापक जी ने बताया।

''ऐसा है तो इसी की कहानी सुनाइए न।'' तीनों एक स्वर से बोले।

''बहुत खूब!'' अध्यापक विजयसेन मान गए।

''फिर कहिए'', तीनों कहानी सुनने के लिए उत्सुक हुए।

''पुरानी बात है। सन् 1816 ई. की एक घटना है। लीनेक नामक एक डॉक्टर था। वह फ्रांस की राजधानी पेरिस में रहता था। कभी-कभी उसके पास ऐसे मरीज भी आते थे जिनकी छाती में किसी-न-किसी प्रकार की बीमारी हुआ करती थी। ऐसे मरीजों में डॉक्टर साहब रुचि भी खूब लिया करता था।'' कहते-कहते अध्यापक विजयसेन एकाएक रूक-ठहर गए।

''फिर क्या हुआ?'' सुमन ने जिज्ञासा दिखाई।

अध्यापक महोदय ने कहानी आगे बढ़ायी, ''डॉक्टर लीनेक के पास जब छाती की बीमारी से संबंधित कोई मरीज आता था तो उसके सामने एक बड़ी कठिनाई उत्पन्न हो जाती थी।''

''किस तरह की कठिनाई?'' संतोष ने जानना चाहा।

''दरअसल उस समय तक किसी ऐसे यंत्र का आविष्कार नहीं हुआ था, जिसकी मदद से छाती के मरीजों की अच्छी जांच-पड़ताल की जा सके।'' अध्यापक महोदय ने सभी को बताया।

''ऐसी स्थिति में मरीजों का इलाज करने में निःसंदेह डॉक्टर साहब की कठिनाई काफी बढ़ जाती होगी।'' शशि ने अपनी बात रखी।

''बिल्कुल।'' अध्यापक जी ने शशि की बात को काफी गम्भीरता से लिया।

''तो फिर?'' संतोष ने अध्यापक जी की ओर निहारा।

''एक दिन डॉक्टर लीनेक सड़क पर यों ही चहलकदमी कर रहे थे। अचानक सड़क पर खेल रहे दो बच्चों पर उनकी निगाह जा अटकी। दोनों बच्चे एक पतली सी लकड़ी से खेल रहे थे। पहले ने लकड़ी का एक सिरा अपने कान से लगा रखा था और दूसरा लकड़ी के दूसरे सिरे को बांये हाथ से धीरे से पकड़कर अपने दाएं हाथ की ऊँगली से लकड़ी को ठक-ठक कर रहा था। पहला बच्चा लकड़ी से गुजरती हुई हल्की आवाज को बड़े ध्यान से सुन रहा था।''

''अच्छा तो?'' संतोष ने हुंकारी दी।

''इस साधारण सी घटना ने डॉक्टर लीनेक के दिमाग में एक नई सूझ पैदा की। वह तुरंत अस्पताल आ पहुँचे। वहाँ उसने कागजों की सहायता से एक लम्बी-सी नली तैयार की, कहते-कहते अध्यापक महोदय एकाएक चुप हो गए। गला साफ कर क्षण भर बाद वह फिर बोलने लगे, ''जानते हो, उसने उस नली का क्या किया?''

''नहीं तो।'' समवेत स्वर उभरा।

''उसका एक सिरा उसने छाती की बीमारी से पीड़ित किसी मरीज के सीने पर लगाया और दूसरा सिरा अपने कान से सटा रखा। अगले ही पल उसके होठों पर हल्की सी मुस्कराहट दिखाई दी। डॉक्टर साहब को छाती के मरीजों की अच्छी तरह जांच-पड़ताल करने के लिए जिस एक यंत्र का अभाव बहुत दिनों से खटक रहा था, वह आज उसे अनायास मिल गया।''

''मतलब यह कि कागज की बनी उस नली से डॉ. साहब ने मरीज के हृदय की धड़कन सुन ली।'' शशि हैरान हो बोला।

''बिल्कुल'',

''फिर तो डॉक्टर लीनेक की एक बहुत बड़ी समस्या आसानी से सुलझ गई अर्थात् हल हो गई।'' संतोष खुश हो बोला।

''ऐसा ही समझ लो,'' अध्यापक महोदय ने कहा।

''हाँ तो?'' सुमन आगे जानने के लिए उतावला हो रहा था।

''और जानते हो, डॉक्टर सीनेक की यही सूझ धीरे-धीरे विकसित होकर एक दिन स्टेथोस्कोप के रूप में हमारे सामने प्रकट हुई, जिसे आज हम प्रायः सभी डॉक्टरों के पास देखते हैं। अब कहो, स्टेथोस्कोप की यह जन्मकथा तुम्हें कैसी लगी?'' अध्यापक महोदय ने तीनों भाईयों से एक साथ पूछा।

''बहुत अच्छी'', तीनों बोल उठे, ''खूब मजेदार रही।''

फिर सभी वहाँ से चल दिए। ❖

पढ़ो और हँसो

पति : दुनिया का सबसे बेहतरीन सिंगर कौन है?
पत्नी : नहीं मालूम, तुम बताओ?
पति : मच्छर है।
पत्नी : कैसे?
पति : उसका गाना किसी को पसन्द आए या न आए पर ताली सबको बजानी पड़ती है।

भिखारी : भाई, एक रुपया दे दो, तीन दिन से भूखा हूँ।
राहगीर : तीन दिन से भूखा है तो एक रुपये का क्या करेगा?
भिखारी : अपना वजन तोलूंगा कितना घटा है?

मोटू : यार बताओ, 'आई एम गोइंग' का क्या अर्थ होता है?
पतलू : मैं जा रहा हूँ।
मोटू : ऐसे कैसे चले जाओगे? यह सवाल मैं 10 लोगों से पूछ चुका हूँ। सब यही कहते हैं कि 'मैं जा रहा हूँ।' इसका सही जवाब बताकर जाओ।

पपलू : क्या कल तुम्हारी पूरी क्लास पिकनिक पर जा रही है?
टपलू : हमारी क्लास तो नहीं, पर हाँ, बच्चे जरूर पिकनिक पर जा रहे हैं।

रमेश : महेश, ये फोर्ड क्या है?
महेश : भाई गाड़ी है।
रमेश : तो फिर ऑक्सफोर्ड क्या है?
महेश : सिंपल है भाई! 'ऑक्स' का मतलब बैल और 'फोर्ड' का मतलब गाड़ी कि बैलगाड़ी।

टीचर : कल हम लोग सूरज के ऊपर चर्चा करेंगे। तुम सभी कल जरूर आना।
राहुल : नहीं सर! कल मैं नहीं आ सकता।
टीचर : क्यों?
राहुल : सर मेरे पापा मुझे सूरज पर नहीं जाने देंगे।

इंटरव्यू लेने वाले ने आर्यन से पूछा– इस पोस्ट के लिए हमें ऐसा व्यक्ति चाहिए जो जिम्मेदार हो।
आर्यन : जी सर! फिर तो मैं ही इस पोस्ट का दावेदार हूँ क्योंकि मेरी पिछली नौकरी में अगर कुछ भी गलत होता था तो उसका जिम्मेदार मैं ही होता था।

– पूजा (जयपुर)

संगीतकार : (पड़ोसन से) मैं आपके कुत्ते से बहुत परेशान हूँ। जब भी मैं सुबह रियाज़ (अभ्यास) करता हूँ तो वह भौंकने लगता है।

पड़ोसन : इसमें मैं क्या कर सकती हूँ। शुरुआत तो हमेशा आप ही करते हैं।

एक व्यक्ति अपनी पत्नी से बोला– जाओ आईना लेकर आओ, मैंने अपना चेहरा देखना है।

थोड़ी देर बाद पत्नी खाली हाथ लौटकर आई और बोली– मुझे किसी भी दर्पण में आपका चेहरा दिखाई नहीं दिया। सबमें मेरा ही चेहरा दिखाई दे रहा था।

जंगल में एक चूहा बहुत तेजी से भागा जा रहा था। हिरण ने उसे रोका।

हिरण : भाई! इतनी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो?

चूहा : किसी ने हाथी को धक्का देकर गिरा दिया परन्तु सब मेरा नाम लगा रहे हैं।

धन्नूजी का नौकर एकदम गंवार था। एक दिन धन्नूजी ने समझाया– तुम सभ्यता सीखो। किसी को भी संबोधन करते समय उसके नाम के आगे 'जी' लगाया करो।

थोड़ी देर में नौकर दौड़कर धन्नूजी के पास आया और बोला– साहब जी, साहब जी! बाहर कुत्ते जी ने मुर्गे जी को पकड़ लिया है।

एक बार एक कंजूस सेठ किराये की टैक्सी में बैठा जा रहा था कि अचानक ही टैक्सी ड्राइवर बोला– साहब! टैक्सी के ब्रेक फेल हो गये हैं।

इस पर सेठ जल्दी से बोला– अरे! ब्रेक फेल हो गये हैं तो क्या हुआ? पहले जल्दी से तुम टैक्सी का मीटर तो बन्द करो भाई।

आठवीं में पढ़ रहे हनी ने अखबार में डूबे अपने पिता से डरते-डरते पूछा– अकबर की शासन पद्धति पर एक नोट लिखवा देंगे?

–हाँ, लिखवा देता हूँ पर तुम अपनी माँ से क्यों नहीं कहते?

–दरअसल मुझे नोट लिखना है, उपन्यास नहीं।– हनी ने सिर खुजलाते हुए कहा।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

माँ को संसार में सर्वाधिक ऊँचा दर्जा प्राप्त है। माँ को सर्वाधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। क्या कारण है? इसके लिए निम्न तथ्यों पर गौर करते हैं-

- माँ रातभर जागती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चा अच्छी प्रकार से सो पाए अर्थात् बच्चे की नींद के लिए अपनी नींद का त्याग करती है।
- इससे पहले कि बच्चा नींद से जाग जाए फटाफट अपना कार्य निपटाती है ताकि बच्चे के जागने पर उसकी तरफ पूरा ध्यान दिया जा सके।
- अपना कार्य समय से पहले निपटाती है ताकि बच्चे को पूरा समय दे सके।
- उसे प्रथम शिक्षा भी देती है और फिर उसके आगे की सही दिशा/शिक्षा से आनन्दित होती है।
- बच्चे को कभी-कभी दण्ड भी देती है अर्थात् पिटाई भी करती है किन्तु बच्चे की भलाई के लिए और बच्चे की सफलता पर वह गर्व करती है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि माँ का जीवन मानव संसाधन से परिपूर्ण है। यही कारण है कि माँ को संसार में सर्वाधिक सम्मानजनक स्थान प्राप्त है।

प्रस्तुति : सुकर्मपाल गिरि

उड़ने वाली गिलहरियां

पेड़ों की टहनियों पर उछलने, फुदकने और दौड़ने वाली गिलहरी के बारे में तो तुम जानते ही हो पर अगर हम कह रहे कि उड़ने वाली भी गिलहरी होती है तो तुम आश्चर्यचकित हो जाओगे। पर यह एकदम सच्ची है कि उड़ने वाली गिलहरी भी होती है। ये उड़न गिलहरी असम, बांदीपुर और राजस्थान के कुछ जंगलों में पाई जाती है। इसकी उड़ान लगभग 40-50 गज की दूरी तक होती है। इसके उड़ने की काबिलियत का सारा दारोमदार टाँगों के बीच फैली झिल्ली पर है। यह जमीन पर कूद-कूदकर चलती है। इसकी यह कूद झिल्ली के कारण ही है। गूलर और बेर इसके प्रिय खाद्य हैं। वैसे यह फल-फूल, कीड़े-मकोड़े, पेड़ की छाल इत्यादि भी खाती है। चूंकि उड़न गिलहरी देश के सीमित क्षेत्रों में ही पाई जाती है। अतः इसका शिकार कानूनी अपराध है। अभयारण्य वन्य जीवों के सुरक्षा स्थल हैं। दक्षिणी राजस्थान के प्रतापगढ़ में स्थित 'सीतामाता' वन इसी कारण अभयारण्य बनाया गया है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

प्यारे बच्चे

कविता : हरजीत निषाद

नन्हे-मुन्ने प्यारे बच्चे।
दिल के भोले-भाले बच्चे।
जिधर चलाओ चलते जाते,
हैं ये लाल दुलारे बच्चे।।

बच्चे होते मन के सच्चे।
ज्यों मिट्टी के भांडे कच्चे।
ढलकर सुन्दर रूप निखरता,
हैं सबसे ही प्यारे बच्चे।।

सभी दिशा में प्रभु रहता है।
कभी न सीमा में बंधता है।
देख सभी में प्रभु की मूरत,
बच्चे बनते जाते अच्छे।।

मात-पिता, गुरु का सम्मान।
करके बनना नेक महान।
होगी जग में ऊँची शान,
सबके बनें सहारे बच्चे।।

चिड़िया

बाल कविता : मीनू सिंह

एक थी चिड़िया मोटी-ताजी,
उड़ने से लाचार थी।
ऊपर से तो स्वस्थ दिख रही,
अन्दर से बीमार थी।।

चलते फिरते दाना खाती,
पानी पीती गटर-गटर।
फूल की सेज पर बैठी-बैठी,
सोती रहती थी दिनभर।।

बंदर भालू उसे समझाते,
किया करो तुम भी कुछ काम।
काम करोगी स्वस्थ रहोगी,
सुस्ती छोड़ो त्यागो आराम।।

धीरे-धीरे बात पते की,
समझ गई चिड़िया रानी।
अपने काम स्वयं अब करती,
दूर हुई सब परेशानी।।

आपके पत्र मिले

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया के नियमित पाठक हैं। हमें हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। मुझे इसमें प्रकाशित शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक बातें हमारे जीवन का मार्गदर्शन करती हैं। स्तम्भों में 'अनमोल वचन', 'कभी न भूलो' ज्ञानवर्द्धक होते हैं तथा 'पढ़ो और हँसो' भी मुझे बहुत पसन्द है।

– पूरन सिंह सैनी (पालम, नई दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। अच्छी इसलिए लगती है कि इस पत्रिका के माध्यम से बच्चों में आप अच्छे संस्कार का निर्वाह कर रहे हैं और इन्हें अच्छा ज्ञान दे रहे हैं।

– जगदीश नैलवाल (ब्रह्मपुरी, दिल्ली)

हँसती दुनिया एक ऐसी पत्रिका है जिससे बच्चों का बौद्धिक विकास होता है। इस पत्रिका में कहानियां, कविताएं तथा 'पढ़ो और हँसो' इत्यादि पढ़ने में बहुत मजा आता है।

– वैभव किशोर (डांगोली मांट)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। इस पत्रिका से हमें बहुत ज्ञान प्राप्त होता है। मेरे दोस्तों को भी यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। हम सब यह आशा करते हैं कि यह पत्रिका और श्रेष्ठ हो और हर व्यक्ति को इसके बारे में ज्ञान हो।

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

मैं हँसती दुनिया की पुरानी पाठिका हूँ। मुझे और मेरे परिवार को यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। इसकी कहानियां, लेख, कविताएं आदि से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हम उम्मीद करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका को प्रकाशित करते रहे।

– स्वीटी हशमतराय भागवानी (इन्दौर)

हम हँसती दुनिया के पुराने पाठक हैं। हमें इस पत्रिका में 'पढ़ो और हँसो', कविताएं एवं कहानियां बहुत अच्छी लगती हैं। इसको पढ़ने से हमारा मनोरंजन होता है और ज्ञान भी बढ़ता है। मेरे घर के सदस्य इसे बड़े शौक से पढ़ते हैं। हर महीने हम इस पत्रिका का इन्तजार करते हैं।

– संगीता धामेला (बालाघाट)

मैं हँसती दुनिया की पुरानी पाठिका हूँ। मैं इस पत्रिका को बहुत ही ध्यान से पढ़ती हूँ। महीना शुरू होते ही मुझे इस पत्रिका का इन्तजार रहता है। मुझे इस पत्रिका में 'पढ़ो और हँसो' तथा 'कभी न भूलो' बहुत पसन्द है।

– गीता खनेजा निरंकारी (कलनौर)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे इसमें प्रकाशित कविताएं और कहानियां बहुत पसन्द हैं।

इसकी कहानियां प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद होती हैं। यह पत्रिका मनोरंजन कराने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी है।

– मोहक कुमार (सब्जी मंडी, पानीपत)

फरवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **यशिका पंजवानी** — **14 वर्ष**
   झूलेलाल सोसाइटी,
   एफसीआई गोदाम के सामने,
   गोधरा (गुजरात)
2. **शिव बम्बानी** — **11 वर्ष**
   झूलेलाल सोसाइटी,
   एफसीआई गोदाम के सामने,
   गोधरा (गुजरात)
3. **दक्ष पंजाली** — **11 वर्ष**
   योगेश्वर पदमावती सोसाइटी,
   गोधरा (गुजरात)
4. **शिवांगी सिंह** — **12 वर्ष**
   गाँव व पोस्ट : सन्दाना,
   जिला : उन्नाव (उ.प्र.)
5. **आशीष चावला** — **8 वर्ष**
   जीएच-12, फ्लैट नं. 71,
   पश्चिम विहार,
   नई दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

कौशिकी सिंह
(सन्दाना, उन्नाव)
यश लखवानी, प्रियाशा, खुशी वनवानी,
परी कलवानी, सिमरन गंगवानी
(भाटापारा)
चिराग (वर्ली, मुम्बई)
कनिष्का
(मोती भवन, जगतदल)

सुमित, मुस्कान, मोहित गुरनानी, कृष्णा,
हार्दिक, लहर, चांदनी, नंदिनी
मूलचंदानी, हितांशी, कार्तिक, रोशनी,
जय, निशिका मनवानी, मुस्कान
लालवानी, गौरी तेहलानी, अनंत बम्बानी,
भूमि खिमानी, रौनक मिहानी, भविका,
हनिशा रामचंदानी, मंथन पंजवानी,
हार्दिक इसरानी, नमन मोटवानी, हीर
कलवानी, यशिका देवजानी, माही
(गोधरा)

मई अंक रंग भरो

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **28 जून** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जुलाई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
KIDS DIVINE
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
सुनो तराने
नए पुराने
Nirankari Radio
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
SV
SOUL VIBES
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on Last Friday of every month
Voice Divine
DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

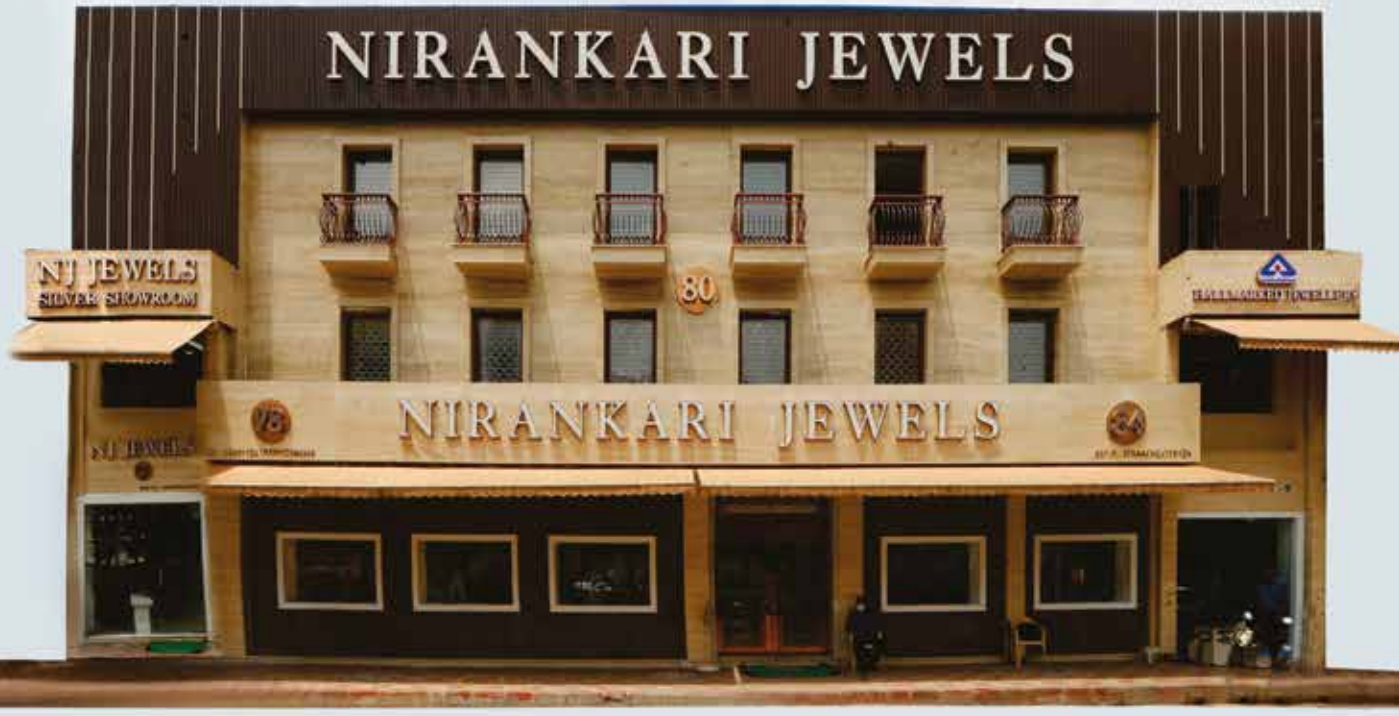

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed

Customer Care : **9818883394**